

सदा रहनेवाला संदेश

अनुक्रमणिका

सदा रहनेवाला संदेश

मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम
के ईश देवत्व के सबूत

ईश देवत्व का अंत

सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता ।

मुहम्मद का भेजा जाना मानवता के
लिए प्रसन्नता है।

वह हमेशा रहनेवाला सन्देश क्या है।

सदा रहनेवाला सन्देश सारे ब्रह्माण्ड
को उन्नत शिखर का मार्ग दिखाया ।

सदा रहनेवाला संदेश सारे नबी और
रसूलों का धर्म है ।

सदा रहनेवाले सन्देश की पूर्णतः

(इस्लाम के) कानून बनाने के विधान
इस्लामिक नियम की विशेषताएँ ।

इस्लामिक शरिअत और संसारिक
कानून... अंतर और इख्तिलाफ ।

इस्लाम धर्म के स्रोत

सदा रहनेवाला संदेश

जैसे जैसे लोग देवत्व मार्गदर्शन और रसूलों के संदेश से दूर होते गये, लोगों में अप्रसन्नता और अंधेरा छा गया। ईश्वर एक रसूल के बाद दूसरा रसूल भेजता रहा। रसूल शुभ समाचार देनेवाले और सचेत करनेवाले बनाकर भेजे गये हैं, ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुकाबले में (अपने निर्दोष होने का) कोई तर्क न रहे। अल्लाह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, तत्त्वदर्शी है। (अल-निसा, 165)

ईश्वर किसी को रसूल भेजने से पहले यातना नहीं देता। और हम लोगों को यातना नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें। (अल-इसा, 15)

ईसा (अलैहिसलाम) के आने, फिर ईश्वर की ओर से उन्हें उठा लिये जाने के बाद मानवता अज्ञान, गुमराही और अन्याय से पीड़ित थी। पवित्र एकीकरण के सिद्धांत को मूर्ति पूजा से बदलने वाले गलत लोगों की ओर से देवत्व धर्म बदलाव और विरूपण का शिकार हो गये, जो ईश्वर की शान में गुस्ताखी करते थे, ना हक उस पर आरोप लगाते थे। परन्तु किताब वालों और मूर्ति पूजा करनेवालों के जीवन और प्रार्थनाओं के बीच कोई अंतर नहीं था। नास्तिकता, बहु आराधिकता और ईश्वर की वाणी में परिवर्तन के ढेर के बीच एकीकरण का आकाश बुझ गया। किताब वालों ने वचनों और ईश्वर की वाणी को पीठ पीछे डाल दिया। उसकी परवाह नहीं की। सत्य को छुपाया। असत्य को प्रभुत्व प्रधान किया। ईश्वर और प्रजा के अधिकारों को कुछ न समझते हुए ईश्वर की हराम की हुई चीजों का उपयोग किया। और इस तरह से वे सत्य को छिपाते हुए मामूली-मामूली धन और नायकत्व प्राप्त कर लिये, जिस प्रकार से कि हवस के पीछे चलने वाले



एक महत्वपूर्ण घटना

मानवता के इतिहास में सबसे सर्वश्रेष्ठ परिणाम के अनुसार जो घटना घटी है, वह इस्लाम धर्म का उपस्थित होना है।

जॉर्ज सारथोन

वाशिंगटन और हारवर्ड यूनिवर्सिटी का प्राध्यापक

और सत्य को छोड़कर अपनी इच्छाओं को सही समझने वाले उनके मुखियाओं के साथ हुआ है। परन्तु रक्त रंजित युद्ध साधारण चीज़ हो गयी। अत्याचार आम हो गया। मानवता गहरे अंधेरे में जीवन बिताने लगी, और अज्ञान और बहुआराधिकता के कारण पाक दिल ना पाक हो गये। चरित्र बिगड़ गये। बलात्कार किया जाने लगा। अधिकारों का उल्लंघन होने लगा और जगह-जगह बुराई फैलने लगी। यहाँ तक कि अगर कोई विद्वान विचार करेगा, तो उसको यह मालूम हो जायेगा कि उस समय

अगर ईश्वर किसी ऐसे महान सुधारक को न सुधारता, जो ईश देवत्व के मशाल को और मार्गदर्शन के प्रकाश को मानवता के मार्ग को रोशन करने और सीधे पथ की ओर उसकी मार्गदर्शनी के लिए उठाये तो मानवता अपनी मौत के पास हो गयी थी और अपने निधन का निर्णय कर चुकी थी।

परन्तु मानवीय जीवन के इस अंधेरे काल में ईश्वर ने अपने नबी को भेजा। और मुहम्मद को अपना मबी बनाया, ताकि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (अन्तिम नबी) हैं। (अल-अहज़ाब, 40)

ईश्वर ने अपने नबी के साथ गुमराही और अप्रसन्नता से मानवता को बचाने वाला प्रकाश देकर भेजा। यहाँ तक कि ईश्वर ने मानवता के लिए इस धर्म को पूरा किया। अपनी पूरी अनुग्रह को पूर्ण किया और सारे संसार तक सत्यता को पहुँचाने के लिए प्रयास किया। हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल अंबिया, 107)

ताकि उन्हें प्रसन्नता के मार्ग का स्वाद प्राप्त हो जाये।

ताकि उन्हें प्रसन्नता के मार्ग का स्वाद प्राप्त हो जाये। आप अपने सारे

प्रयासों में संसार के थोड़े माल की भी इच्छा नहीं रखते थे, और न आप लोगों से कोई बदला माँगते थे। ईश्वर ने कहा। कह दो, मैं इसपर तुमसे कोई पारिश्रमिक नहीं माँगता, और न मैं अपनी ओर से बातें बनाने वालों में से हूँ।

(साँद, 86)

बल्कि ईश्वर ने आपको इंजील रसूल होने या मानव रसूल होने का विकल्प दिया तो आप ने मानव रसूल होने का विकल्प चुन लिया। आप दूसरे मानव की तरह एक मानव होकर जीवन बिताने थे। आपको अपने साथियों की तरह भूख लगती थी। आप अपने साथियों की तरह घायल हुआ करते थे। आप उनके साथ काम करते थे, और आपको ईश्वर का बन्दा होने पर गर्व था। परन्तु ईश्वर ने आपको जब सम्मान देने का निर्णय लिया, तो आपके बन्दे होने का गुण वर्णन किया। ईश्वर ने कहा। प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर यह किताब उतारी और उसमें (अर्थात् उस बन्दे में) कोई टेढ़ नहीं रखी (अल-कहफ़ 1)

बल्कि आप हर किसी को अपने बारे में अतिशयोक्ति करने या अपने अधिकार से ज्यादा अधिकार देने से डराते थे। आप



सबसे अधिक प्रभावित करनेवाली खबर

इस्लाम धर्म के उपस्थित होने की खबर मानवता की इतिहास में सबसे अधिक प्रभावित करने वाली खबर है, इस प्रकार से कि इस्लाम धर्म ऐसे लोक में उपस्थित हुआ, जिनका इस्लाम की उपस्थिति से पहले कोई नामो-निशान नहीं था। और ऐसे देश में इस्लाम की उपस्थिति हुई, जिसका कोई हिसाब ही नहीं था। परन्तु इस्लाम की उपस्थिति पर केवल दस(10) ही वर्ष हुए थे कि इस्लाम बड़ी और फैली हुई शाशनों को तोड़ते हुए, कई वंशज और कई दशकों से चले आते हुए पुरातन धर्मों को मिटाते हुए, संसार के कई प्रांतों के लोगों की भावनाओं को बदलते हुए, और मज़बूत स्थंभों वाली एक नया संसार बनाते हुए इस्लाम की व्याप्ति हुई, और वह संसार इस्लामिक संसार है।

लोथो पस्ट्रु डार्ड

अमेरिकन लेखक



सारे संसार के लिए करुणामय

निश्चित रूप से मुहम्मद (स) के जीवन के समान कोई जीवन, आप की तरह सौच-विचार की क्षमता, अपनी लोक में स्थित अज्ञानता और मिथक के विरुद्ध प्रभावशाली सफलता, मूर्ती पूजा करने वालों से मिलने वाली कष्टों पर दृढ़ रहना, अपने संदेश को बुलन्द करना, और इस्लामी सिद्धांत के स्थंभों को मज़बूत करने के लिए आपकी बहादुरी इस बात का सबूत है कि आप अपने मन में किसी धोखे का विचार गुप्त नहीं रखा करते थे, या आप गलत नहीं थे। आप दार्शनिक, वक्ता, प्रवक्ता, इस्लामी नियम बताने वाले, मानवता की बुद्धि की ओर निर्देश करने वाले, ऐसे धर्म की स्थापना करने वाले जिसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं, पृथ्वी पर 20 राज्य बनाने वाले और आकाश पर आध्यात्मिक राज्य के विजेता। कोई मनुष्य है जिसको आपके समान मानवीय सम्मान मिला ? और कोई मनुष्य है जो सफलताओं के उस उच्छ स्थर को प्राप्त किया हो। जिसको आपने प्राप्त किया है।

लामार्थीन

फ्रेंच कवी

ने कहा ईसा इब्ने मरियम के बारे में ईसाइयों के समान आप लोग मेरे बारे में अतिशयोक्ति न करो। मैं तो केवल ईश्वर का बन्दा हूँ। परन्तु आप लोग मुझे ईश्वर का बन्दा और रसूल कहो (इमाम बुखारी ने इस हदीस को वर्णन किया। आपको देखने और जाननेवाला हर व्यक्ति आपकी सत्यता जान लेता है। आपके चरित्र से हक्का-बक्का हो जाता है, और आपके आचार से खुश हो जाता है। कैसे नहीं होगा। जबकि दोस्तों से पहले दुश्मनों ने और मुसलमानों से पहले काफ़िरों ने

आपके हक में गवाही दी। आपके लिये तो आचार के प्रति आपके रब की गवाही काफ़ी है। निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल कलम, 4)

बल्कि आप के लिए रसूलों और नबियों का ईशवर की ओर से समापक बनाया जाना ही काफ़ी है। जब आपका मिशन पूरा हो गया तो ईशवर ने आपको मृत्यु दी और आपके संदेश को मानवता के लिए क्रियामत तक बाकी रख दिया।

मानवता के महान लोग

निश्चित रूप से इतिहास में मुहम्मद (स) ही केवल वह व्यक्ति है जो धार्मिक और सामाजिक दोनों मंच में बेमिसाल सफलता प्राप्त की है। धार्मिक रूप से और सामाजिक रूप से संसार पर एक साथ प्रभावित करने की यह क्षमता इस विषय पर मजबूर करती है कि मानवीय इतिहास में मुहम्मद (स) सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति है।

मैकल हार्ट

अमेरिकन लेखक

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईश देवत्व के सबूत

1. -सारे रसूलों के समान आपने एक ईशवर की प्रार्थना करने, उसके अतिरिक्त किसी और की प्रार्थना न करने का संदेश दिया। अगर कोई मूसा और ईसा द्वारा लाये हुए सिद्धांत, आदेश और लाभदायक शिक्षा और मुहम्मद द्वारा लाये हुए शिक्षा की तुलना करेगा, तो उसको इन सारी शिक्षाओं का एक ही स्रोत से आने का ज्ञान प्राप्त होगा, और वह स्रोत ईश देवत्व है।

2. आपने चमत्कारों और खुली खुली निशानियों का प्रकट किया, जो ईशवर के नबी ही प्रकट कर सकते हैं। निस्संदेह पिछले रसूलों द्वारा चमत्कार के रूप में अपनी सामान्य आदतें दिखाना ईशवर की पद्धति थी, जो रसूलों की सत्यता का सबूत और अपनी कौमों के विरोध तर्क पूरा करने का रास्ता था। हर नबी का चमत्कार उन्हीं चीज़ों से संबंधित होता था, जिनमें उनकी क़ौम चतुर होती थी। मूसा का चमत्कार उनकी क़ौम के कौशल के अनुसार था, जो जादू है। ईशवर ने मूसा द्वारा चमत्कार प्रकट करते हुए उनकी जादू को नाकाम (असफल) बना दिया। वे विभिन्न जादूओं का अनुभव रखते हुए भी मूसा का मुकाबला करने से असह्य रहे। ईसा की क़ौम विभिन्न चिकित्साओं का अनुभव रखती थी। ईशवर ने ईसा द्वारा गंभीर रोगों की चिकित्सा की। यहाँ तक कि ईशवर ने ईसा द्वारा मुर्दों को भी ज़िन्दा किया। यह भौतिक

कृतघ्न ही विरोध कर सकता है

मुहम्मद(स) निश्चित रूप से सच्चे नबी हैं, और मुहम्मद (स) को मुक्ती दिलाने वाले मार्ग की ओर निर्देश करने वाला स्वीकार न करना असंभव है।

हेन्स कोंग

स्वसि धार्मिक संत

चमत्कार है। इसी प्रकार से यह समय और स्थान में सीमित है। परन्तु यह चमत्कार सारे संसार के लिये या सदा रहनेवाला नहीं है। मुहम्मद के चमत्कारों में से भौतिक चमत्कार भी हैं। जिनमें से कुछ ये हैं: आपकी उंगलियों से जल का निकलना। आपकी मौजूदगी में थोड़े से भोजन का ज्यादा हो जाना, यहाँ तक कि आपके साथ रहनेवाले सारे मुसलमान उस भोजन को खा लेते थे, बल्कि कुछ भोजन बाकी भी रह जाता था। थोड़े से जल का बहुत हो जाना, यहाँ तक कि पूरी सेना उसको पीति थी और उससे वज्र भी करती थी। ऊँटनी का आपके प्रेम में रोना, जबकि आप उसको छोड़कर मंच की ओर चले गये। मक्का मुकर्रमा में पत्थरों का आपको सलाम करना। पेड़ों का आपके पीछे चलना। आपके हाथ में कंकरियों का तस्बीह (ईश्वर की बढाई) करना। ईश्वर के आदेश से आपके द्वारा रोगियों का स्वस्थ होना। इसके अतिरिक्त और भी आपके चमत्कार हैं। इन चमत्कारों में से मेराज के चमत्कार को खुरआन ने वर्णन किया, जबकि आप को मस्जिदे हराम (मक्का) से मस्जिदे अक्सा (फलस्तीन) ले जाया गया, फिर वहाँ से आपको ऊपर की सैर करायी गयी, यहाँ तक कि आप सात आकाश पार कर गये। ईश्वर ने कहा। क्या ही महिमावान है वह जो रातों-रात अपने बन्दे (मुहम्मद) को प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) से दूरवर्ती मस्जिद (अक्सा) तक ले गया, जिसके चतुर्दिक (माहौल) को हमने बरकत दी, ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियाँ दिखाएँ। निस्संदेह वही सब कुछ सुनता, देखता है। (अल-इस्सा, 1)



ईश्वरीय ग्रंथ

जब मैं ने खुराने करीम को संपूर्ण रूप से पढ़लिया तो मेरे भीतर यह भावना पैदा हुई कि खुरआन प्राणी और बहुतसी विषयों के बारे में निस्संदेह पूर्वक उत्तरों पर शामिल है, और खुराने करीम ने घटनाओं को बड़े अच्छे तार्किक रूप में वर्णन किया है, जब कि यही घटनाएँ खुरआन के अतिरिक्त दूसरी धार्मिक किताबों में एक समान नहीं मिलती। जहाँ तक खुरआन की बात है, तो खुरआन ने भव्य और निर्णायक रूप में इन घटनाओं का वर्णन करते हुए इस बात में कोई संदेह नहीं रखा की यही सत्य है, और यही निश्चित रूप से ईश्वर की ओर से मिलने वाला ग्रंथ है।

डिपोरा पोटर

अमेरिकन पत्रकार

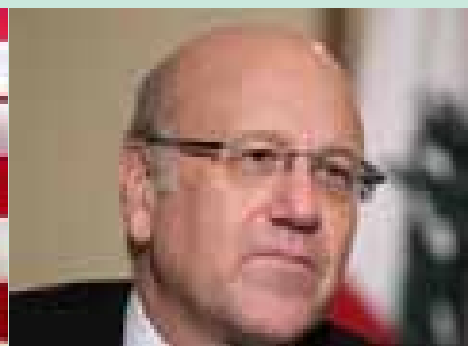


क्या ही अंतर है

इस्लाम धर्म के समान दूसरा कोई ऐसा धर्म नहीं है जो मुहम्मद (स) से पहले आने वाले नबी और रसूलों को सम्मान देता है। इस्लाम धर्म अपने भक्तों पर अनिवार्य करता है कि वे इनका सम्मान करे और इनपर विश्वास रखे। इस्लाम धर्म के समान दूसरा कोई ऐसा धर्म नहीं है जो इस्लाम से पहले आनेवाले आकाशीय धर्मों का सम्मान करता हो।

नश्री सलहब

लेबनानी विद्वान (पंडित)



इसी प्रकार से खुरआन ने चाँद फटने के चमत्कार का भी वर्णन किया है। ईश्वर का कहना है वह घड़ी निकट आ लगी और चाँद फट गया। (अल-कमर, 1)

बहु आराधकों ने आप से ऐसे चमत्कार की माँग कि, जो आपके सत्यता का सबूत हो सके। विशेष तौर पर वे चाँद को फाटने का अनुरोध किये, और अगर आप चाँद को फाट दिये तो ईमान लाने का वादा किया। उस समय चाँदनी रात थी यानी चौदवी रात थी। इस रात चाँद अपने पूर्ण रूप में निकलता है। ईश्वर के रसूल ने अपने रब से यह प्रार्थना की वह आपको इन बहु आराधकों के अनुरोध को पूरा करने की क्षमता दे। परन्तु चाँद दो टुकड़े हो गया। एक टुकड़ा सफा पहाड़ी पर और दूसरा टुकड़ा “खैखान” पहाड़ी पर (जो सफा के सामने है) इस महान निशानी के आजाने के बाद भी बहु आराधकों ने आपको सत्य नहीं माना, बल्कि इसको जादू समझा। ईश्वर के धर्म से पीठ फेरनेवालों की यही आदत रही है, जब भी सत्यता उनकी शक्ति को नाश करदेती है और उसका प्रकाश उनकी गुमराही को मिटा देता है, तो इस जैसे समय में वे नियमों का विरूपण करके या तथ्य को बदल के वे सत्यता के साथ धोखा देने का प्रयास करने में कोई डर नहीं रखते। उनका यह विचार होता है कि यह प्रयास सत्यता का विनाश करने का जिम्मेदार है। ईश्वर ने कहा किन्तु हाल यह है कि यदि वे कोई निशानी देख भी लें तो टाल जाएँगे और कहेंगे, यह तो जादू है, जो पहले से चला आ रहा है। उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया किन्तु हर मामले के लिए एक नियत अवधि है। (अल-कमर, 2-3)

3. खुरआन: इन चमत्कारों में खुरआन सबसे महान और जब तक दुनिया रहेगी



साफ-साफ अरबी भाषा में

पवित्र खुरआन के इन महत्वपूर्ण अध्यायों में मुहम्मद (स) ने जिन संकेतों का वर्णन किया है, उनके सामने मानवता के सारे महान पंडितों का कोई स्थान नहीं रहता, जैसे की हम तक पहुँचने वाली मन-घड़त हदीसों को संकेतों के सामने रखने से पता चलता है।

ब्लाचेर रिजिश
प्राच्य विद्या विशारद

काल की सूचनाये हैं। अपरिवर्तन आदेश, उच्च चरित्र, मार्गदर्शन, प्रकाश और अनुग्रह है।

इसी प्रकार से वहय (देवत्व रहस्य उद्घाटन) द्वारा बतायाई हुई ब्रह्माण्ड की वैज्ञानिक तथ्य से वर्तमान काल में वैज्ञानिक आविष्कारों की (जिनका पहले कभी ज्ञान नहीं था) अनुरूपता हमारे नबी मुहम्मद के ईश देवत्व के सत्य होने का खुला सबूत है। इसी प्रकार से आधुनिक ज्ञान ने कुछ समय पहले माँ के पेट में भ्रूण की दशाओं की, और समुद्र में मीठे और नमकीन पानी के बीच जलीय बाँध होने, इसके अतिरिक्त और भी खोज की है। खुरआन का ईशवर की ओर से अवतरित होने का सबसे बड़ा सबूत चौदह सदियों से बिना किसी विरूपण और

तब तक यह रहनेवाला है। यह अर्थवान और मान्सिक चमत्कार और ईश देवत्व की निशानियों में से एक निशानी है। इसलिए कि यह वाक्यपट्ट पुस्तक है, जिसको ईशवर ने ऐसे अनपढ़ व्यक्ति पर अवतरित किया है जो लिखना-पढ़ना नहीं जानता है, और सुवक्ता लोगों को यह चुनौती दी कि वे इस जैसी वाणी को या इस जैसा एक सूरा लाये। खुरआन में स्थिर चमत्कार और चुनौती का घमंडी ही तिरस्कार कर सकता है। खुरआन अपनी शैली, वाग्मिता और समन्वय के अनुसार चमत्कार है। इसमें पूर्वकाल और भविष्य

परिवर्तन के सुरक्षित रहना है, जिसमें आज तक कोई तबदीली नहीं हुई है, और खुरआन को पढ़नेवाला, चाहे जितना भी उसको पढ़ले, कभी वह थक नहीं जाता। ईशवर ने कहा। यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं (अल-हिज्र, 9)

बल्कि खुरआन द्वारा सही सिद्धान्त को सुरक्षित रखा। संपूर्ण शरीअत (नियम) का वर्णन किया और सर्वश्रेष्ठ कौम को इसके द्वारा संतुलित बना दिया। इससे हमें यह मालूम होता है कि हमारे नबी मुहम्मद का चमत्कार दूसरे नबियों के चमत्कारों के मुकाबले में महानता, विश्व व्याप्त और सदा बाँकी रहने के कारण सबसे अलग है। खुरआन की चुनौती आज तक सब के लिए बाँकी है। और क्रियामत तक आनेवाले लोगों का खुरआन जैसी वाणी लाने से असहाय होना यकीनी है। ईशवर ने कहा। कह दो, यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ कि इस खुरआन जैसी कोई चीज़ लायें तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों। (बनी इसराईल, 88)

4. आप ने संसार के कई घटनाओं के बारे में भविष्यवाणी की, परन्तु सारी घटनायें आपकी भविष्यवाणी के समान ही हुई, जैसे सिरिया, इराक और कॉन्स्टेंटिनोपल के विजेता की घोषणा की। इसी प्रकार से आदम से लेकर सारे रसूल: नूह, इब्राहीम, मुसा और ईसा तक सब कौमों के अपने रसूलों के साथ व्यवहार के बारे में, और पिछले कौमों के बारे में घोषणा की। आप ने भविष्य की घटनाओं के बारे में भी भविष्यवाणी की, और यह सारी घटनाएँ आपकी भविष्यवाणी के समान ही हुई। इन घटनाओं में से एक यह है कि जब फारसी लोग रूम पर विजेता प्राप्त कर लिये, तो ईशवर ने घोषणा की के कुछ वर्षों के बाद रूम फारसियों पर विजेता प्राप्त करलेंगे। ईशवर ने कहा। अलिफ-लाम-मीम। रूमी निकटवर्ती क्षेत्र में पराभूत हो गए हैं। और वे अपने पराभव के पश्चात शीघ्र ही कुछ वर्षों में प्रभावी हो जाएँगे। हुक्म तो अल्लाह ही का है, पहले भी और उसके बाद भी, और उस दिन ईमानवाले अल्लाह की सहायता से प्रसन्न होंगे। वह जिसकी चाहता है सहायता करता है। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, दयावान है। यह अल्लाह



खुरआन और आधुनिक
विज्ञान एक पल्ले में

मैंने खुरआन को पढ़ा है, पढ़ने से पहले मेरे मस्तिष्क में इसके बारे में किसी प्रकार का पूर्व ज्ञान नहीं था, और पूरे वस्तु निष्ठता से मैंने उसे पढ़ा, मेरा लक्ष्य यह था कि खुरआन के संदेश और आधुनिक विज्ञान के बीच समानता के स्तर की खोज करूँ, तो मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआ की आधुनिक विज्ञान की दृष्टिकोण से खुरआन का एक संदेश भी आलोचना का अवसर नहीं रखता।

मोरेस बुकाई
फ्रेंच वैद्य और वैज्ञानिक



का वादा है। अल्लाह अपने वादा का उल्लंघन नहीं करता, किन्तु अधिकांश लोग जानते नहीं। वे सांसारिक जीवन के केवल बाह्य रूप को जानते हैं। (अल-रूम, 1-7)

निश्चय ऐसे ही हुआ जैसे ईश्वर ने घोषणा की।

5. पूर्वकाल में आनेवाले सारे नबी आपके आने से कई सदियों पहले आपके बारे में घोषणा की। आप जिस देश में आर्येंगे उस देश के लक्षणों का वर्णन किया। सारी क्रौमों और सारे राजाओं का आपके और आपकी क्रौम के आज्ञावान होने, और आपके लाये हुए धर्म के फैलाव की घोषणा की।

6. आप सारे रसूलों के समापक हैं। अगर आप न भेजे जाते, तो आप से पहले आनेवाले उन सारे रसूलों की ईश देवत्व अवैध हो जाती, जिन्होंने आपके आने की शुभ सूचना की है।

7. असहिष्णुता से दूर रहने वाले कुछ किताब वालों जैसे साधु बुहैरा, वरखा बिन नौफल, सल्मान फारसी, अब्दुलाल बिन सलाम और जैद इब्ने साना ने आपके नबी बनने के समय यह गवाही दी कि आप सच्चे हैं और आपके बारे में तौरात और इंजील में सबूत उपलब्ध है।

8. आपके साथ युद्ध करने वाले सारे क्रौमों के विरोध आपको विजेता मिलना, आपके सच्चे नबी होने की निशानी है क्योंकि किसी व्यक्ति का ईश्वर की ओर से नबी होने का झूठा दावा करना, फिर ईश्वर का उसको विजेता प्राप्त करना, उसका दुश्मनों पर प्रभाव होना, उसके संदेश का आम होना और उसके अनुयायियों की अधिक संख्या होना असंभव है। इसलिए कि ये सारी चीज़ें केवल सच्चे नबी के ही हाथों प्रकट हो सकती हैं।

9. आपकी प्रार्थना, शद्धता, सत्यता, उच्च चरित्र, अच्छे नियम और व्यवहार के उच्च शिखर पर होना है। निश्चय ईश्वर ने आपको अनुशासनबद्ध किया, और आपको सर्वश्रेष्ठ अनुशासित बनाया। निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल-कलाम, 4)

यह ईश्वर का ग्रंथ है

मुझे एक क्षण के लिए भी मुहम्मद (स) के संदेश में कोई संदेह नहीं होता है, और मेरा यह विश्वास है कि आप सारे नबी और रसूलों के अंत में आने वाले हैं, आपको सारे मानवता के लिए रसूल बनाकर भेजा गया है, और तौरात, बैबल के रूप में आनेवाले देवत्व ग्रंथों के अंत में आनेवाला आपका संदेश है। इसका सबसे बड़ा सबूत चमत्कारी खुरआन है। मैं यूरोपियन वैज्ञानिक और इस्लाम धर्म के शत्रु बिस्काल के सारे विचारों का तिरस्कार करता हूँ, परंतु उसके एक विचार के साथ मैं सहमत हूँ। वह यह है कि खुरआन लेखक मुहम्मद (स) नहीं है, जिस प्रकार के बैबल के लेखक मत्ता नहीं है।

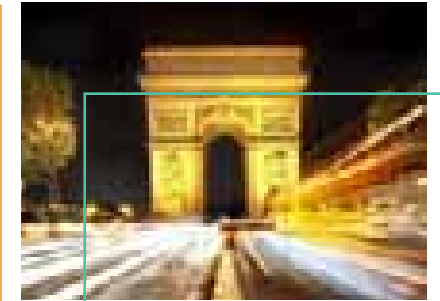
फनसाई मुंताई

फ्रेच आलोचक और पर्याटक

निश्चित रूप से यह सारी बातें केवल सच्चे नबी में इकट्ठा हो सकती हैं।

10. मुहम्मद के ईश देवत्व और चमत्कारों का पीढ़ी दर पीढ़ी हम तक पहुँचना। जो व्यक्ति सारे रसूलों के परिस्थितियों का विचार करेगा और उनके इतिहास को पढ़ेगा, तो उसको निस्संदेह यह यकीन हो जायेगा कि जिस किसी बात से किसी नबी के ईश देवत्व होने का सबूत मिलता है, उसी बात से मुहम्मद के नबी होने का सबूत अवश्य मिल जाता है। जब आप मूसा और ईसा की ईशदेवत्व हम तक पहुँचने के बारे में विचार करोगे, तो आपको यह ज्ञान प्राप्त होगा कि पीढ़ी दर पीढ़ी एक दूसरे को बताने के कारण यह हम तक पहुँची है। मुहम्मद के ईश देवत्व की खबर हम तक जिन पीढ़ियों द्वारा पहुँची है वह महान, दुर्द और हमारे युग से करीब है। इसी प्रकार से सारे रसूलों के चमत्कार और निशानियों का पीढ़ी दर पीढ़ी हम तक पहुँचना भी एक सबूत है, बल्कि मुहम्मद के हक में यह महत्वपूर्ण सबूत है, इसलिए कि आपकी निशानियाँ बहुत हैं, बल्कि आप की सबसे बड़ी निशानी यह पवित्र खुरआन है, जो आज तक पीढ़ी दर पीढ़ी वाणी और पुस्तक के रूप में मौजूद है।

11. मुहम्मद का अनपढ़ होना आपके चमत्कारों का एक सबूत है। निश्चित रूप से ईश्वर ने अपने नबी को अनपढ़ बनाकर भेजा, जो न लिखना जानते हैं और न पढ़ना। बल्कि आपका अनपढ़ होना खुरआन ईश्वर द्वारा अवतरित होने का सब से बड़ा सबूत है, विशेषता के साथ उस समय जबकि आप कई वर्षों तक अपनी क्रौम के बीच जीवन बिताये। अगर आप लिखना-पढ़ना जानते, तो बहु आराधक यह दावा करते कि आपकी लायी हुई सारी बातें स्वयं आपके आविष्कार हैं और आप के विचारों का परिणाम है। ईश्वर ने कहा। इसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर किताब अवतरित की है, तो जिन्हें हमने किताब प्रदान की



ईश्वर की कारीगरी

प्राचीन परंपराओं के शासन में जीवित समझे जानेवाले देशों में स्थिर चरित्र अधः पथन के काल में अचानक अरब की जंगलों में एक विरोधी का आगमन हुआ जो बिलकते हुए इस बड़े शासन का पीछा करने लगा, और इसी प्रकार से वह पश्चिम में जन्म लेने वाली नई-नई शासनों का भी वह बड़ा विरोधी था। इस विरोधी की समानता देखते-देखते बढ़ती गई, इस प्रकार से कि ईश्वर की पर्यवेक्षण ही उसके स-हृदय सेना को युद्ध और सफलता की ओर ले जा रही है, यहाँ तक की सीरिया और ईजिप्ट की फतह के कुछ समय बाद ही शासनीयों का साम्राज्य समाप्त होने लगा, और कोंसटेंटाइन मित्रों को भी इसी प्रकार कि अंत चेतानवी मिलचुकी थी।

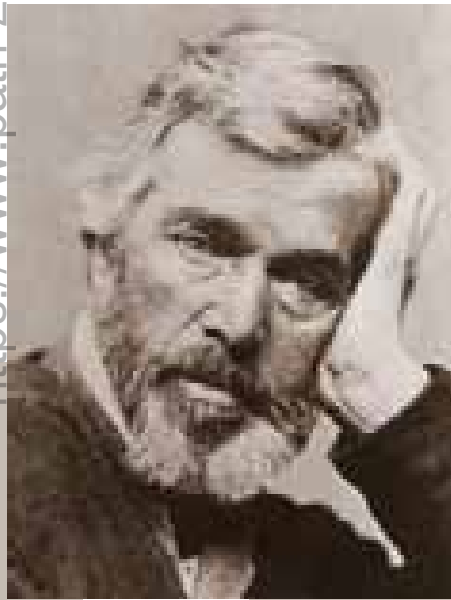
आलडोमिली

फ्रेच प्राच्य विशारद

हैं वे उसपर ईमान लाएँगे। उनमें से कुछ ईमान ला भी रहे हैं। हमारी आयतों का इनकार तो केवल न माननेवाले ही करते हैं। इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते ही थे। ऐसा होता तो ये मिथ्यावादी सन्देह में पड़ सकते थे। (अल-अनकबूत, 47-48)

इसी प्रकार इस बात की पुष्टि होती है कि आपकी लायी हुई सारी बातें ईश्वर की ओर से हैं, आपकी ओर से नहीं। ईश्वर ने कहा वही है जिसने उम्मियों में उन्हीं में से एक रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें निखारता है और उन्हें किताब और हिकमत (तत्त्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, निस्संदेह इससे पहले तो वे खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे। (अल-जुमुआ, 2)

अनपढ़ रसूल के बारे में यह कहना कि वह अनपढ़ लोगों के सामने ईश्वर की आयतें यानी वहय पढ़कर सुनाते हैं, उन्हें पवित्र बनाते हैं और उन्हें किताब की शिक्षा देते हैं, (जिस प्रकार से कि पिछले रसूल अपनी कौमों को शिक्षा देते थे), और पिछले रसूलों के समान वह उन्हें तत्त्वदर्शिता की शिक्षा देते हैं। इन सब गुणों में इस रसूल के अनपढ़ होने के चमत्कार द्वारा चुनौती है। आप हालांकि अनपढ़ थे, फिर भी अपनी कौम को वह सब लाभ की बातें बताये, जो पिछले पढ़े-लिखे रसूल अपनी कौमों को बताया करते थे। आप लाभ की बातें बताने में कुछ कमी नहीं की। इस प्रकार अनपढ़ होना आपके लिए पिछले पढ़े-लिखे रसूलों जैसे मूसा के चमत्कारों से सर्वश्रेष्ठ चमत्कार बनकर उभरा है।



ईश देवत्व के चरित्र

निश्चित रूप से मैं मुहम्मद (स) से प्रेम करता हूँ, क्यों कि आपकी व्यक्तित्व में बनावट नहीं थी। रेगिस्थान में जन्म लेने वाले इस व्यक्ति में स्वतंत्र राय थी, केवल स्वयं ही पर निर्भर थे, और अपने बारे में बड़-बढ़कर बातें न बताते थे, आप घमंडी नहीं थे लेकिन आप निम्न शैली भी नहीं थे। आप अपने पुराने कपड़ों में भी उसी प्रकार से जीवित थे जिस प्रकार से ईश्वर की इच्छा थी। आप साफ-साफ स्वर में रुम और एशिया के राजाओं से बात करते थे, उन्हें इस जीवन और आने वाले भविष्य जीवन की आवश्यकताओं कि ओर बुलाते थे। आप अपने व्यक्तित्व का स्थर जानते थे। और आप दृढ़ संकल्प वाले थे, आज का काम कल पर नहीं टालते थे।

टामल कार्लई

स्काटलैंड का इतिहासकार और लेखक



ईश देवत्व का अंत



धर्म एक है

सारे नबीयों का धर्म एक था, वे सब आदम से लेकर मुहम्मद (स) तक एक ही सिद्धांत को मानने वाले थे। तीन आकाशीय पवित्र पुस्तकें आईं, वे ज़बूर, तौरात और खुरआन हैं, तौरात के सामने खुरआन का दर्जा बिल्कुल ज़बूर के सामने तौरात के जैसा है। मुहम्मद (स) का दर्जा ईसा के सामने बिल्कुल मूसा के सामने ईसा के दर्जे के समान है। लेकिन जिस विषय का जानना अधिक अवश्य है वह यह है कि खुरआन आकाशीय अंतिम किताब है, जो लोगों के निर्देश के लिए आयी है। इस किताब को लाने वाले रसूलों के अंत में आनेवाले हैं, परंतु खुरआन के बाद कोई किताब नहीं और मुहम्मद(स) के बाद कोई नबी नहीं है।

हेन्डी दी काष्ट्री

फ्रेंच सेना का पूर्व (जनरल) अध्यक्ष

ईश्वर की तत्त्वदर्शिता ने यह चाहा कि मुहम्मद को धरती वालों के लिए एक ऐसा सन्देश देकर भेजे, जो हर समय और स्थान के अनुकूल हो। ईश्वर ने कहा हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (सबा, 28)

और विरूपण, परिवर्तन से इस सन्देश को सुरक्षित रखना चाहा ताकि आपका यह सन्देश मानव के जीवित रहने तक जीवित रहे, परिवर्तन और विरूपण के संदेह से पवित्र रहे। इसी कारण ईश्वर ने इस सन्देश को सारे संदेशों का समापक बनाया। और मुहम्मद को सारे रसूलों के अंत में आनेवाला बनाया। आपके बाद कोई रसूल नहीं है। इसलिए कि ईश्वर ने



पवित्र पुस्तकों के अंत में आनेवाली किताब

कभी किसी समय मानवता और उसके चरित्र के लिए तौरात ही निर्देशक थी, यहाँ तक की ईसा आये, तो उनके अनुयायीओं ने इंजील की शिक्षाओं का अनुकरण किया, फिर खुरआन इन दोनों के स्थान पर आ गया। और खुरआन इन दोनों पुस्तकों से अधिक विवरणात्मक है, इसी प्रकार से खुरआन ने इन दोनों पुस्तकों में स्थिर विरूपण और परिवर्तन को सुधारा। खुरआन में हर विषय विवरण प्राप्त होता है और खुरआन सारे नियमों पर आधारित है क्यों कि खुरआन अंत में आनेवाली पवित्र पुस्तक है।

वाशिंगटन एरफिंग

अमेरिकन प्राश्चय विशारद

आपके द्वारा सारे संदेशों को पूर्ण कर दिया, नियमों को समाप्त कर दिया और शरीर को संपूर्ण कर दिया।

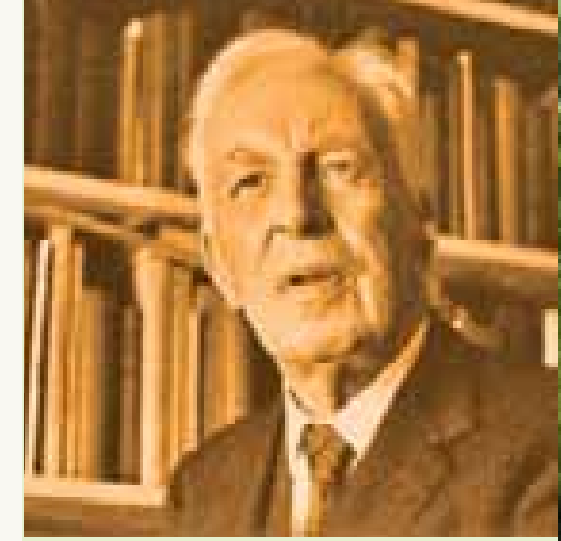
इसी कारण मुहम्मद की लायी हुई किताब को पिछली सारी किताबों पर ईश्वर ने प्रभावित किया और इन किताबों का रद्द करनेवाला बनाया। इसी प्रकार आपके नियमों को पिछले सारे नियमों का रद्द करनेवाला बनाया। ईश्वर ने आपके सन्देश को सुरक्षा रखने की ज़मानत लेली। परन्तु पीडि दर पीडि यह सन्देश बराबर पहुँचता रहा, इस प्रकार से कि खुरआन वाणी और लिखित के रूप में एक पीडी से दूसरी पीडी तक आता रहा। और इस धर्म के नियम, प्रार्थना, सन्देश और पद्धतियाँ वास्तविक जीवन में उपयोग द्वारा पहुँचते रहे।

जो व्यक्ति मुहम्मद की सीरत (आत्मकथा) और हदीस की बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ेगा, वह यह ज्ञान प्राप्त करलेगा कि आप के सहाबा (साथी) मानवता के लिए आपकी सारी परिस्थितियाँ, सारी बातें और सारे कार्य को सुरक्षित रखा। वे आपके अपने ईश्वर

की प्रार्थना करने, उसके स्मरण करने, आपके ईश्वर से क्षमा की प्रार्थना करने, ईश्वर के मार्ग में युद्ध करने, आपकी दयालुता और बहादुर होने, आपका अपने साथियों और आनेवाले मेहमानों के साथ व्यवहार की पंजीकृत किया। इसी प्रकार से सहाबा ने आपकी खुशी और गम की घड़ियों को, सफर और गृहस्थ के लम्हों को, आपके खाने-पीने, पहनने, आपके सोने और जागने के तरीके को लिखित रूप में सुरक्षित रखा।

जब आपको यह भावना प्राप्त हो जाये, तो आप को स्वयं ईश्वर की ओर इस धर्म के सुरक्षित रहने का विश्वास हो जायेगा।

और उस समय यह ज्ञान प्राप्त हो जायेगा कि मुहम्मद सारे नबी और रसूलों के समापक है। इसलिए कि ईश्वर ने हमें यह सूचना दी है कि यह रसूल सारे रसूलों के समापक है। ईश्वर ने कहा। मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के बाप नहीं है, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (अन्तिम नबी) हैं। अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है।
(अल-अहज़ाब, 40)



मानवता के गुरु

मैंने रसूल अरबी की जीवन शैली उनके अनुयायीओं के बुद्धियों से प्राप्त किया, आपका व्यक्तित्व इन बुद्धिमानों के भीतर बहुत महान है। परन्तु यह लोग ने आपके संदेश पर इस प्रकार से विश्वास रखते हैं जो उन्हें आपकी ओर आनेवाले देवत्व आदेश का पालन करने पर मजबूर करता है। इसी प्रकार से आपके कार्य (जैसा कि हदीस में बताया गया) नियमों का नीव है। यह केवल मुसलमानों के जीवन के अनुशास के लिए ही नहीं, बल्कि मुसलमान विजेता के गैर मुस्लिम प्रजा के साथ संबन्धों के अनुशासन पर भी आधारित है।

अरनाल्ड ट्वेनबी

ब्रिटिश इतिहासकार

सारे नबियों के अंत में आनेवाले नबी

नबी मुहम्मद (स) से मोहित होने वालों में से मैं भी एक हूँ। जिनका ईश्वरने चयन करलिया है, ताकी उनके द्वारा अंतिम देवत्व संदेश लोगों तक पहुँचे, और वह अंतिम नबी हो।

टोल स्टीव

रूसी लेखक



एक ईश्वर की आराधना करो

मुहम्मद (स) सारे रसूलों के अंत में आनेवाले महान रसूल थे जिनको एक ईश्वर की आराधना और सारे मानवों को बुलाने के लिए भेजा गया।

वाशिंगटन एरफिंग

अमेरिकन प्राश्चय विशारद



सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता ।

ईश्वर ने अपने नबी मुहम्मद को इसलिए भेजा ताकि वह सारे संसार, स्त्री-पुरुष, छोटे बड़े के लिए सर्वथा दयालुता हो बल्कि ईश्वर ने आपको उस व्यक्ति के लिए भी दयालुता बनाकर भेजा जो आप पर विश्वास नहीं रखता था। आपके सारे जीवन में दया खुलकर सामने आती है। इस दया का सब से बड़ा पक्ष यह है कि जब आप अपनी क़ौम पर दया करते हुए सीधे पथ की ओर बुलाये, तो वे आपको झुठलाये। आपको अपने शहर मक्का से बहिष्कार किया, और आप की हत्या करने का प्रयास किया। लेकिन ईश्वर ने आपको सुरक्षा प्रदान की और उनके साथ चाल चली। ईश्वर ने कहा । और याद करो जब इन्कार करनेवाले तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे। तुम्हें कैद रखें या तुम्हें कत्ल कर दें या तुम्हें निकाल बाहर करें। वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह भी अपनी चाल चल रहा था। अल्लाह सबसे अच्छी चाल चलता है। (अल-अनफ़ाल, 30)

यह सब चालें आपके भीतर अपने क़ौम के लिये दया और उनके मार्गदर्शन की इच्छा अधिक होने का ही कारण बनी। इस बारे में ईश्वर ने यह कहा। तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए लालायित है। वह मोमिनो के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है। (अल-तौबा, 128)

इस्लाम का विश्व विख्यात

निस्संदेह यह खुरआन की वह आयत (वाक्य) जो ईश्वर द्वारा सारे संसार के लिए दयालुता बनाकर भेजे गये रसूल पर अवतरित धर्म का विवरण करते हुए इस्लाम की विश्व विख्यात का संकेत दिया है, यह सारे संसार के लिए सीदी सदा है। यह इस बात का खुला सबूत है कि रसूल को यह यकीन था कि उनका संदेश अरब खौम की सीमायें पार कर जायेगा, और इस बात की आवश्यकता है की वह अपने इस नये संदेश को उन खौमों तक भी पहुँचाए, जिनका संभन्ध अलग अलग ज़ात से है और जो विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोलती हैं।

लोरा वेण्चि फ़यागलेरी

इटालियन प्रच्य विधी विचारक



फिर जब आप अपनी क़ौम के विरोध मक्का फतह कर लिये, उस समय आपने उनको क्षमा कर दिया। और जब ईश्वर ने आपके पास आपकी क़ौम का विनाश करने के लक्ष्य से दो बड़े पहाड़ों को मिलाने के लिए एक इंजील को भेजा, तो आपने कहा: बल्कि सब्र करो, हो सकता है कि उनकी पीड़ियों में से कोई एक ईश्वर की प्रार्थना करनेवाला पैदा हो जाये। ईश्वर ने कहा । हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)

आप सारे संसार के लिए, हर रंग, भाषा, विचार, सिद्धांत और स्थान के लोगों के लिए दयालुता बनाकर भेजे गये।

आपकी दयालुता केवल मानवता के लिए ही नहीं, बल्कि पत्थरों और जानवरों के लिए भी आप दयालु थे। एक अन्सारी साहबी का ऊँट, जिसको उसके मालिक ने मारा था और उसको भूखा छोड़ दिया था। ईश्वर के रसूल को



उसकी स्थिति पर तरस आया। आप ने उस पर दया की। मालिक को ऊँट के साथ अच्छा व्यवहार करने, उसको भूखा न रखने और उसकी ऊर्जा से अधिक बोझ न लादने का आदेश दिया। जब आपने एक व्यक्ति को कबूतर के बच्चों को लेते हुए देखा, तो आपने उनपर दया की, हमदर्दी दिखायी, बच्चों को कबूतर के पास लौटाने का आदेश दिया। आप ने तो यह कहा है: जब तुम ज़ब्ह करो तो अच्छे तरीके से करो। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है) इसी प्रकार से आप की दयालुता पत्थरों को भी अपने अन्दर समा लेती है। परन्तु आप उस ऊँटनी के लिए हमदर्द हो गये, जो आपकी जुदाई पर निराश थी, आपने उसपर दया की। उसके पास पहुँचे। अपने गले से लगाया यहाँ तक कि वह शांत हो गयी।

आपकी यह दयालुता केवल एक परिस्थिति और घटना नहीं थी। बल्कि यह आदेश, नियम तरीका और चरित्र था, जो आपने लोगों को पालन करने के लिए कहा। निश्चय लोगों के साथ दया, करुणा, सहानुभूति की ओर उत्तेजित करते हुए, और लोगों के बीच आपसी वैर पैदा करने से डराते हुए आप ने यह कहा: ऐ प्रभु। जो भी व्यक्ति मेरे क़ौम के किसी भी मामले का ज़िम्मेदार बनें और उनके बीच आपसी वैर डाल दे, तो तू उस पर सख्ती कर। और जो भी व्यक्ति मेरे क़ौम के किसी मामले का ज़िम्मेदार बने और उनपर दया करे तो तू उस पर दया कर (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने वर्णन किया है।) दयालुता आपके आचार में से सब से महत्वपूर्ण आचार है, दया और सुरक्षा वाले धर्म इस्लाम का मूल नियम है।

सर्वथा दयालुता

मुहम्मद के महान इतिहासिक जीवन का जिस रूप में ईश्वर द्वारा विवरण किया गया है, उससे अधिकतर अच्छा विवरण करना संभव नहीं है। इस प्रकार कि ईश्वर ने कहा: हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। निस्संदेह इस महान अनंत ने स्वयं यह परिमाण दिया कि वह हर मजबूर और प्रत्येक ज़रूरतमंद के लिए सबसे महान दयालु हैं। निश्चित रूप से अनाथ, ज़रूरतमंद, पीड़ित, गरीब और मजदूरों के लिए मुहम्मद वास्तव में दयालुता हैं।

जॉनलेक

स्पानीश प्रच्य विधी विचारक



मुहम्मद का भेजा जाना मानवता के लिए प्रसन्नता है।

मुहम्मद नबी बनकर आये, तो मुहम्मद के ईश देवत्व आपकी लायी हुई बातों और मार्गदर्शन से ईश्वर नै मानवता को ऐसे मार्गदर्शन किया, जिसका वर्णन करना और ज्ञान प्राप्त करना आसान नहीं है। आप मानवता के लिए लाभदायक ज्ञान, अच्छे कार्य, उच्च चरित्र और सीधा पथ लेकर आये। अगर सारी कौमों की ज्ञान और व्यवहार के प्रति तत्वदर्शिता का मुहम्मद के लाये हुए तत्वदर्शिता से तुलना की जाये तो दोनों में बहुत अंतर दिखायी देगा। ईश्वर ही के लिए उसकी इच्छा के अनुसार सारी प्रशंसाएँ हैं।

सिद्धांत के पहलू से (यह कहा जा सकता है कि) मानवता के बीच बहु आराधिका और एक ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों की प्रार्थना करना आम था, यहाँ तक कि पिछले बहुत से देवत्व पुस्तकों वाले भी इससे पौडित थे। फिर अल्लाह के रसूल एकीकरण का सिद्धांत और उस ईश्वर की प्रार्थना का संदेश लेकर आये जिसका कोई साझी नहीं। लोगों की मानवीय पूजा से निकाल कर मानवीय प्रभु की पूजा की ओर बुलाया। उनके मन को एकीकरण के सिद्धांत द्वारा बहु आराधिका और एक ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों की पूजा करने की गंदगी से पवित्र बनाया। ईश्वर ने मुहम्मद को उसी संदेश के साथ अवतरित किया, जिसको लेकर पिछले सारे नबी और रसूल आये थे। ईश्वर ने कहा। हमने तुमसे पहले जो

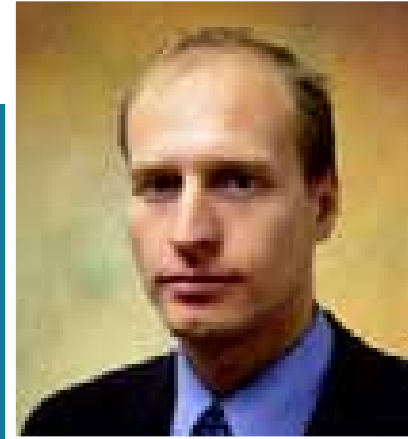
रसूल भी भेजा उसकी ओर यही प्रकाशना की, मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बन्दगी करो। (अल-अंबिया, 25)

ईश्वर ने यह भी कहा। तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है, उस कृपाशील और दयावान के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं। (अल-बक्रा, 163)

सामाजिक पहलू से (यह कहा जा सकता है कि) आप को उस समय रसूल बनाकर भेजा गया, जिस समय अन्याय और दासता का रिवाज था। सामाजिक रूढ़िवाद परंपराओं ने मानवता को कई भागों में विभाजित किया था, जो एक दूसरे को दासता बनाते और अन्याय करते। तो मुहम्मद सारे लोगों के बीच, अरब के हो या न हों, गोरे हो या काले हों, समानता का संदेश लेकर आये। हर एक को दूसरे पर केवल ईश्वर के डर और अच्छे कार्य ही के कारण महत्व मिलता है। ईश्वर ने कहा। वास्तव में अल्लाह के यहाँ तुम में सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुम में सबसे अधिक डर रखता है। (अल-हुजुरात, 13)

आप ने न्याय, दया और सामाजिक एकजुटता का आदेश दिया। अन्याय, निर्दय और जुल्म से (रोका) निषेध किया। ईश्वर ने कहा। निश्चय ही अल्लाह न्याय का और भलाई का और नातेदारों को (उनके हक) देने का आदेश देता है और अश्लीलता, बुराई और सरकशी से रोकता है। वह तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम ध्यान दो। (अल-नहल, 90)

बल्कि लोगों के अधिकार, यहाँ तक कि नैतिक अधिकार का भी ख्याल रखा। परन्तु आपस में एक दूसरे का परिहास करने से रोका। ईश्वर ने कहा। ऐ लोगों जो ईमान लाए हो। न पुरुषों का कोई गिरोह दूसरे पुरुष की हँसी उड़ाए, संभव है वे उनसे



सारे लोगों का धर्म

दो आयतें (वाक्य) 1. दीन(धर्म) तो ईश्वर की दृष्टि में इस्लाम ही है। (आले इमरान, 19), 2. हमने तो तुम्हें सारे ही मनुष्यों को शुभ-सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा (सबा-28)। यह दोनों महान आयतें मेरे मन में गहरा असर छोड़ा है। इसलिए कि इन में उस वैश्विक छवी का परिमाण है, जिसे इस्लाम धर्म पहचाना जाता है। इस के अतिरिक्त इस्लाम की ओर भी विशेषताएँ हैं, जैसे नियम, आदेश और हमारे नबी ईसा के प्रती इस्लाम का विवरण। क्या सारे नबी और रसूलों द्वारा लाए हुए हर संदेश का सम्मान देने का आदेश देनेवाली इन महान शिक्षाओं से अधिकतर सत्य और शक्तिमान कोई और शिक्षा है। निस्संदेह इस्लाम धर्म सत्य, सच्चाई और प्रमाण का धर्म है।

व्याग्नर

हालांकि का वैज्ञानिक

मानवता को अंधेरों से उजाले की और लानेवाला

रसूल मुहम्मद ने सारे संसार को बहुत तेजी के साथ प्रसन्नता के सबसे ऊँचे स्थान पर ला खड़ा किया। जो व्यक्ती न्याय की दृष्टि से मुहम्मद के काल से पहले लोगों कि स्थिती और उनके बिगाड़ को देखें, फिर मुहम्मद के काल में और उस के बाद लोगों की स्थिती, उनको प्राप्त होने वाले महान विकास की ओर देखें, तो वह इन दोनों कालों के बीच धरती और आकाश के समान अंतर पायेगा।

कोईलयम

ब्रिटीष आलोचक

अच्छे हों और न स्त्रियाँ स्त्रियों की हँसी उड़ाएँ, संभव है वे उनसे अच्छी हो, और न अपनों पर ताने कसो और न आपस में एक-दूसरे को बुरी उपाधियों से पुकारो। ईमान के बाद अवज्ञाकारी का नाम जुड़ना बहुत ही बुरा है। और जो व्यक्ति इस नीति से न रुके, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं। (अल-हुजुरात, 11)

नैतिकता के भाग में (यह कहा जा सकता है कि) ईश्वर ने अपने नबी को उस समय भेजा, जब कि मानवता का चरित्र तल (नीचे) जा चुका था। न कोई सदाचार था, न उच्च नैतिकता और न कोई अच्छे आचार। फिर नबी आये, ताकि लोगों को उच्च नैतिकता और अच्छे चरित्र की ओर मोड़ (झुका) दे। इस प्रकार से उनका जीवन अच्छे व्यवहार के कारण सुखमय (आनंद) हो गया। ईश्वर के रसूल (मुहम्मद) ने कहा: मुझे नैतिकता को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है (इस हदीस को इमाम बैहखी ने वर्णन किया। बल्कि ईश्वर ने मुहम्मद के चरित्र (नैतिकता) को सर्वश्रेष्ठ बताया है। ईश्वर ने कहा। निस्संदेह तुम एक महान नैतिकता के शिखर पर हो। (अल-खलम, 4)

परन्तु आप नैतिकता और उच्च चरित्र के उदाहरण थे। आप पवित्रता, सद्व्यवहार, भक्ति, सुशीलता, सुसंभाषण, बल्कि आप हर एक अच्छी बात में उदाहरण थे। ईश्वर ने कहा। निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है, अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे। (अल-अहज़ाब, 21)

जहाँ तक स्त्री की बात है तो वह इस्लाम के आने से पहले दो कठिन चीज़ों से पीड़ित थी। इस प्रकार कि अल्लाह ने अपने नबी को भेजा, उस समय स्त्री का आदर नहीं था,



हज्जतुल विदा (मुहम्मद का अंतिम हज्ज) से मिलने वाले उपदेश

मुहम्मद ने अपने मृत्यु से एक वर्ष पहले मदीने से मक्का की ओर यात्रा करते हुए हज्जतुल विदा किया। उस समय आपने अपनी खौम के सामने महत्वपूर्ण भाषण दिया। इस भाषण का पहले वाक्य के सामने मुसलमानों के बीच स्थिर अन्याय, भेद-भाव, और हत्याचार दब जाता है। इस भाषण के अंतिम वाक्य नीचो मुस्लिम को राजा के समान मानता है। निश्चित रूप से इस भाषण ने संसार में सम्मान जनक और न्याय पर आधारित व्यवहार के महान नियमों की स्थापना की है।

हार्बर्ट जॉर्ज विल्स

ब्रिटिश भाषाविद वैज्ञानिक

उसके कोई अधिकार नहीं थे। लोग स्त्री के प्रति आपसी यह अंतर रखते थे कि वह मानव है या नहीं। क्या उसको जीवित रहने का अधिकार है या फिर उसकी हत्या कर दी जाय, और बाल्य काल में ही उसको दफना दिया जाय। लोग स्त्री के प्रति इस प्रकार की बातें करते थे जैसा कि ईश्वर ने कहा। और जब उनमें से किसी को बेटे की शुभ-सूचना मिलती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा-घुटा रहता है। जो शुभ-सूचना उसे दी गई वह (उसकी दृष्टि में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उसके कारण वह लोगों से छिपता फिरता है कि अपमान सहन करके उसे रहने दे या उसे मिट्टी में दबा दे। देखो, कितना बुरा फैसला है जो वे करते हैं।

(अल-नहल, 58, 59)

परन्तु स्त्री केवल एक खिलौना थी, गुड़िया थी और निरादर प्राणी थी।

तो ईश्वर ने स्त्री को सम्मान देने के लिए अपने रसूल को भेजा। ईश्वर ने कहा। और यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा की। और निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सौच-विचार करते हैं। (अल-रूम, 21)

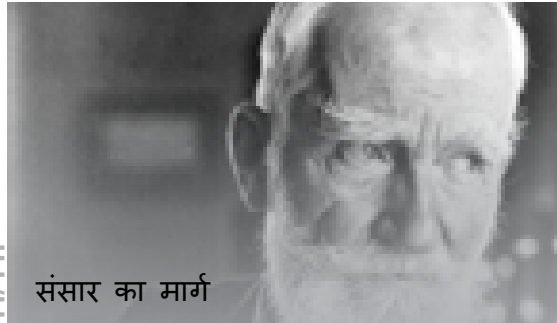


ईश्वर के नबी मुहम्मद के चरित्र

मुहम्मद मनोदशा, चरित्र, नैतिकता और भावना के महान शिखर पर थे। आप चमत्कार्य अहसास, बुद्धिमत्ता और पवित्र भावनाओं की शक्ति रखते थे। आप महान नैतिकता और उच्च आचार के ऊँचे स्थान पर थे।

अब्दुल्ला कोयेलय

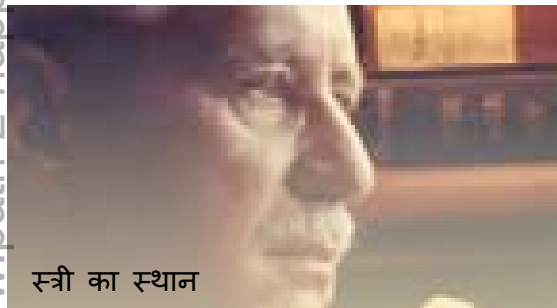
ब्रिटीष आलोचक



संसार का मार्ग

मैंने इस्लाम के रसूल (मुहम्मद) की जीवनी को कई बार अच्छे से पढ़ा है। मैंने इस में केवल वही चरित्र पाए जिनके होने की आवश्यकता होती है। मैंने कई बार यह आशा की इस्लाम सारे संसार का मार्ग हो।

बर्नार्ड शाह
ब्रिटिश लेखक



स्त्री का स्थान

इस्लाम ने अरब देश में स्त्री के स्थान को ऊँचा किया। लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करने के रिवाज को समाप्त किया। न्यायिक कार्यों और संपत्ती के अधिकारों में स्त्री और पुरुष के बीच समानता का निर्णय दिया, स्त्री को हर हलाल काम करने, अपनी संपत्ती और धन की स्वयं सुरक्षा करने, वारीस बनने, और इच्छा के अनुसार अपने धन को खर्च करने का अधिकार दिया है। इस्लाम ने अज्ञानपूर्ण काल में वास्तुओं के समान स्त्रियों का वंशानुक्रम से संतान की संपत्ती बन जाने की परंपरा को समाप्त किया। विरासत में पुरुष के भाग से आधा स्त्री का भाग माना। स्त्रियों की इच्छा के बिना उनका विवाह करने से रोका।

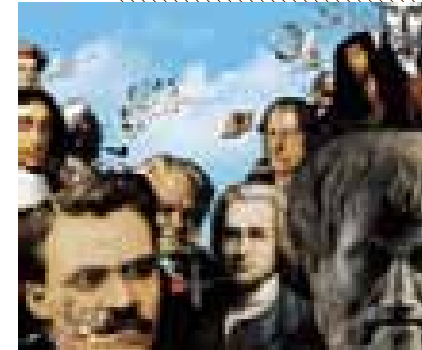
वेल्डोरॉन्ट
अमेरिकन लेखक

बल्कि ईश्वर ने माँ के रूप में स्त्री के साथ सद्व्यवहार करने का आदेश दिया। ईश्वर ने कहा।

तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। (अल-इस्सा, 23)

ईश्वर ने स्त्री के साथ अच्छा व्यवहार करने को पुरुष से अधिक महत्व दिया। परन्तु जब एक व्यक्ति ईश्वर ने रसूल के पास आया, तो कहने लगा: ऐ ईश्वर के रसूल मेरे अच्छे व्यवहार का कौन सब से अधिक अधिकार रखता है। रसूल ने कहा: आपकी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन, रसूल ने कहा: आपकी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन, रसूल ने कहा: आपकी माँ। व्यक्ति ने कहा: फिर इसके बाद कौन। रसूल ने कहा: आपके पिता (इसे हदीस को बुखारी ने वर्णन किया) बेजी के रूप में स्त्री को सम्मान देने का आदेश दिया। कहा: जिस व्यक्ति ने तीन लड़कियों का पालन-पोषण किया। उन पर दया किया और उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया, तो निस्संदेह वह स्वर्ग का अधिकारी है। आप से यह प्रश्न किया गया: ऐ

ईश्वर के रसूल, अगर किसी के पास केवल दो ही लड़कियाँ हो तो। आप ने कहा: चाहे दो ही क्यों न हो। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया है) इसी प्रकार बेटी के रूप में स्त्री को सम्मान दिया। इस सम्मान को स्त्री के अच्छे होने से संबन्धित रखा परन्तु आप ने कहा: तुम में सब से अच्छा व्यक्ति वह है जो अपने घरवालों (बीवि बच्चों) के साथ अच्छा हो। मैं अपने घरवालों के साथ तुम में सब से अच्छा हूँ (इस हदीस को इब्ने माजा ने वर्णन किया।)



अन्याय और जुल्म

पश्चिम के फ़िलासफ़रों का ग्रुप इस समस्या में बहस करने के लिए बैठा कि क्या स्त्री के लिए पुरुष के समान आत्मा है। क्या स्त्री मानवीय आत्मा रखती है या पशु की आत्मा। फ़िलासफ़र यह परिमाण को पहुँचे कि स्त्री को आत्मा है, लेकिन पुरुष के मुकाबले में स्त्री की आत्मा अधिकतर कम दर्जे की है।



वह हमेशा रहनेवाला सन्देश क्या है।

सारे धर्मों में हर धर्म का अपने निर्माता के नाम पर, या उस विशेष क्रौम के नाम पर जिनके बीच उसका निर्माण हुआ, नाम रखा गया। जोरास्टर से सह संबंध होने के कारण जोरास्टरी (फारसी धर्म) रखा गया। बुद्ध के नाम से संबंध करते हुए बौद्धमत नाम रखा गया। यहूदीयत का यह नाम इसलिए रखा गया कि वह यहूजा नामी कुंभे में प्रकट हुआ। नसरानी (ईसाई) धर्म नसारा (सहायतकार) के नाम से दिया गया है। यह बातें इस्लाम के अन्दर नहीं हैं।

इस्लाम धर्म को किसी व्यक्ति या किसी विशेष क्रौम से जोड़ा नहीं गया है। बल्कि हर वह व्यक्ति जो ईश्वर के सामने विनम्र (झुकता) होता है। उसके आदेशों का पालन करता है। और उल्लंघन नहीं करता है। एक ईश्वर की आराधना करता है, तो उसने अपने आप को ईश्वर को सौंप दिया। जब यह नबी और रसूलों के समापक मुहम्मद का अनुसरण करेगा। आपके लाये हुए सत्य धर्म के मार्ग पर चलेगा। आप पर विश्वास रखेगा और आपकी बतायी हुई बातों पर चलेगा, निस्संदेह वह सच्चा मुसलमान है, चाहे वह किसी समय या स्थान का रहनेवाला हो, और किसी भी रंग और जात का हो

ईश्वर वह है जिसका कोई साझी नहीं

ईश्वर के अतिरिक्त कोई प्रभु नहीं है। वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है। वह सत्य है। उसके अतिरिक्त हर चीज़ असत्य है। उस ने हमारी सृष्टी की, वही हमें रोटी देता है। निस्संदेह इस्लाम यह है कि हम अपना मामला ईश्वर को सौंप दें। उसी के सामने आत्मसमर्पण करें। उसी से सुख प्राप्त करें। उसी पर भरोसा रखें। यह विश्वास रखें कि संसार के संतुलन में ईश्वर की तत्त्वदर्शता ही को पूर्ण शक्ति प्राप्त है। इस संसार और भविष्य जीवन में जो भी हमें नसीब में मिले उससे खुश रहें। ईश्वर द्वारा हमें मिलने वाली हर चीज़, चाहे वह कठिन मौत ही क्यों न हो, हमें उसको मुस्कुराते चहरे और सुखी मन के साथ स्वीकार करना चाहिये। हम यह जानलें कि वही भलाई है। उसके अतिरिक्त कोई और भलाई नहीं। मानव की यह नादानी है कि वह संसार और उसकी परिस्थितियों को समझने के लिए अपने कमज़ोर दिमाग से कोई स्वयं हिसाब बनालें। बल्कि मानव के लिए इस बात की आवश्यकता है कि वह इस ब्रह्माण्ड के लिए न्यायिक नियम होने का विश्वास रखे। चाहे वह अहसास न करपाएँ। यह विश्वास रखें कि ब्रह्माण्ड की स्थापना अच्छाई पर आधारित है, और संसार की आत्मा सुधार पर है। मानव को इस बात का ज्ञान रखने और इस पर विश्वास रखने की आवश्यकता है, और सुखी मन के साथ इसका पालन करें।

टोमस कार्लाइ

स्काटलैंड का इतिहासकार और लेखक



अरब समूहों और दूसरे समूहों के बीच कोई अंतर नहीं

मुस्लिम जिस किसी समूहों से वे संबन्धित हों, फिर भी वे आपस में एक दूसरे के लिए अजनबी नहीं हैं। इस्लामिक समूहों में हर प्रकार के अधिकारों से लाभ उठाने में अरब मुस्लिम और चीन मुस्लिम के बीच कोई अंतर नहीं। इसी कारण इस्लामिक अधिकार पश्चीमी अधिकार से पूर्ण रूप से अलग हैं।

गुस्ताव लोबुन

फ्रेंच इतिहासकार



सदा रहनेवाला सन्देश सारे ब्रह्माण्ड को उन्नत शिखर का मार्ग दिखाया ।

इस्लाम वह धर्म है जिसका सारा ब्रह्माण्ड पालन करता है। ईश्वर ने कहा। अब क्या इन लोगों को अल्लाह के दीन (धर्म) के सिवा किसी और दीन की तलब है, हालाँकि आकाशों और धरती में जो कोई भी है स्वेच्छापूर्वक या विवश होकर उसी के आगे झुका हुआ है। और उसी की ओर सबको लौटना है। (आल-इमरान, 83)

यह बात सब जानते हैं कि इस ब्रह्माण्ड की हर चीज़ विशेष नियम और निश्चित आधार पर चलती है। सूर्य, चन्द्रमा, तारे और धरती नियम के अनुसार चलते हैं, जिनसे कण (ज़रा भर भी) भी हटना या निकल जाना उनके वश (बस) की बात नहीं यहाँ तक कि मानव भी जब स्वयं अपने आप में विचार करेगा, तो आपको यह ज्ञान प्राप्त होगा कि मानव भी ईश्वर के विशेष नियमों का पूर्ण रूप से अनुपालन करता है। परन्तु वह अपने जीवन के लिए बनाये गये नियमित देवत्व अनुमान (खुदाई अंदाज़ा) के अनुसार ही साँस लेता है। पानी, भोजन, प्रकाश और गर्मी की आवश्यकता से प्रभावित होता है। शरीर के सारे आंग इसी देवत्व अनुमान के प्रकार चलते हैं। इन अंगों से होने वाला हर काम ईश्वर के निश्चित आधारों के अनुसार ही होता है।

इस ब्रह्माण्ड की हर चीज़, आसमान के बड़े ग्रह से लेकर धरती के छोटे मिट्टी के कण तक, इसी देवत्व पूर्ण अनुमान का पालन करती है। यह शक्तिमान, आदरणीय प्रभु का अनुमान (अंदाज़ा) है। जब आकाश, धरती और इन दोनों

के बीच की हर चीज़ इसी अनुमान (अंदाज़े) की अनुयायी है, तो इस से य मालूम हो जाता है कि इस्लाम सारे ब्रह्माण्ड का धर्म है। क्योंकि इस्लाम का मतलब बिना किसी आपत्ति के पालन करना, अपने शासक के आदेशों को मानना है। सूर्य, चन्द्रमा और धरती ईश्वर के अनुयायी हैं। हवा, पानी, प्रकाश, अंधेरा और गर्मी अनुयायी हैं। पेड़, पत्थर, पशु-पक्षी अनुयायी हैं। ईश्वर ने कहा । जो चीज़ आकाशों में हैं जो धरती में हैं, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार से काम लेते हैं। (अल-जासिया, 13)

बल्कि वह मानव जो अपने ईश्वर का ज्ञान नहीं रखता है, उसके वजूद का इन्कार करता है, उसके निशानियों का तिरस्कार करता है, या उसके अतिरिक्त किसी और की पूजा करता है, किसी और को उसका साझी बनाता है, वह भी अपनी वृत्ति (फितरत) के अनुसार अनुयायी है। मानव के मन में दो बातों के बीच टकराव रहता है।

पहली बात: वह वृत्ति (फितरत) जिसके अनुसार ईश्वर ने मानव की सृष्टि की है। यानी ईश्वर के अनुयायी बनना, उसके सामने झुकना, श्रद्धा से उसकी आराधना करना। हर उस चीज़ से प्रेम करना जिससे ईश्वर प्रेम करता है, जैसे सत्यता, भलाई और नेकी। हर उस चीज़ से नफरत करना जिससे ईश्वर द्वेष करता है, जैसे बुराई, अन्याय और झूठ। इसके अतिरिक्त वृत्ति (फितरत) के अनुसार दूसरी चीज़ें, जैसे खाने-पीने और ब्याह की इच्छा रखना। धन और बाल बच्चों से प्रेम रखना। इसके लिए शरीर के अंगों का अपने-अपने विशेष काम करना। दूसरी बात: मानव की इच्छा और उसकी पसन्द। ईश्वर ने मानव की ओर अपने रसूल भेजे और पुस्तकें अवतरित की। ताकि सच और झूठ, मार्गदर्शन और गुमराही, भलाई और बुराई के बीच मानव अंतर करे। ईश्वर ने मानव को बुद्धि और समझ दी, ताकि वह अपनी पसंद में दूरदर्शिता से काम ले। अगर वह चाहे तो भलाई के मार्ग पर चले, जो उसे सत्यता और मार्गदर्शन की ओर ले जाता है। अगर चाहे तो बुराई के मार्ग पर चले, जो उसे विनाश और असत्य की ओर ले जाता है।



कह दो, यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से। तो अब जो कोई चाहे माने और जो चाहे इनकार कर दे। हमने तो अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है जिसकी कनारों ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे फरियाद करेंगे तो फरियाद के प्रत्युत्तर में उन्हें ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा, वह उनके मुँह भून डालेगा। बहुत ही बुरा है वह पेय और बहुत ही बुरा है वह विश्रामस्थल । (अल-कहफ़, 29)

जब आप पहली बात को सामने रखते हुए मानव की ओर देखेंगे, तो आप उसको आत्मसमर्पण करने वाला और इसी के भीतर जीवित रहने वाला पाओगे। इस आत्मसमर्पण के अलावा मानव के लिए

कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मानव की स्थिति पूर्ण रूप से दूसरे प्राणियों के समान है। जब आप दूसरी बात को सामने रखते हुए मानव की ओर देखेंगे, तो आप उसको चयनित पायेंगे। जो चाहे वह चयन कर सकता है। चाहे तो वह मुसलमान हो जाये, और चाहे तो काफिर। ईश्वर ने कहा। हमने उसे मार्ग दिखाया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्र। (अल-दहर, 3)

इसी कारण आप मानवता को दो भागों में विभाजित देखेंगे: एक वह मानव जो अपने प्रजापति का ज्ञान रखता है। उसको अपना प्रभु, देवता और मालिक जानता है। उसी की पूजा करता है। अपने वैकल्पिक जीवन में उसके नियमों का पालन करता है। जिस प्रकार से कि वह वृत्ति के अनुसार अपने ईश्वर के लिए आत्मसमर्पण करने वाला है, जिसके अतिरिक्त उसके लिए कोई विकल्प नहीं है, इसी प्रकार से वह अपने ईश्वर के अनुमान (तकदीर) का अनुयायी है। यही वह पक्का मुसलमान है जिसका इस्लाम संपूर्ण हो गया और उसका ज्ञान भी सही हो गया। इसलिए कि वह यह ज्ञान प्राप्त कर लिया कि ईश्वर उसका प्रजापति है, जिसने उसके पास रसूलों को भेजा है और ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति दी है। इस मुसलमान की बुद्धि संपूर्ण हो गयी और उसकी सोच सही हो गयी इसलिए कि वह अपने विचार की शक्ति काम में लाया। फिर यह निर्णय लिया कि एक उस ईश्वर के अतिरिक्त किसी और की पूजा न की जाय, जिसने उसको हर विषय में सौंचने समझने की क्षमता दी है। इस मानव की जिह्वा सही हो गयी, सत्य को बोलने वाली हो गयी, इसलिए कि वह अब केवल एक ईश्वर को मानता है, वह ईश्वर जो उसमें बातचीत की क्षमता पैदा की है। अब ऐसा लगेगा कि उसके जीवन में केवल सत्य ही है। इसलिए कि वह अब ईश्वर के उन नियमों का

अनुयायी है जिसमें स्वयं उसी के समस्याओं के लिए अच्छाई है। मानव और सारे प्राणियों के बीच प्रेम और परिचय का संबंध हो गया। इसलिए कि वह तत्त्वदर्श, ज्ञानी ईश्वर की पूजा करता है, जिसके आदेशों और अनुमान (तकदीर) का सारे प्राणी अनुपालन करते हैं। निस्संदेह ऐ मानव ईश्वर ने इन सारे प्राणियों को तेरे ही काम में लगाया है। ईश्वर ने कहा। जो कोई आज्ञाकारिता के साथ अपना रूख अल्लाह की ओर करे और वह उत्तमकार भी हो तो उसने मज़बूत सहारा थाम लिया। सारे मामलों का अंजाम अल्लाह ही की ओर है। (लुकमान, 22)

दोनों के बीच कितना ही बड़ा अंतर है

एक ईसाई होने के कारण मेरे पास पवित्र खुरआन में ईश्वर के एकी करअ के सिद्धांत और तीन ईश्वर को मानने के सिद्धांत के बीच तुलना करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। मैंने यह पाया कि दूसरा सिद्धांत (यानी ईसाई) इस्लामी सिद्धांत से अधिकतर दर्जे कम है। विशेष तौर पर इस सिद्धांत के कारण मैं ईसाई धर्म से अपना विश्वास खोने लगा। क्योंकि किसी भी धर्म में ईश्वर पर विश्वास रखना सबसे पहला और महत्वपूर्ण सिद्धांत है। जब धार्मिक संकल्पना के अनुसार ईश्वर पर मेरा विश्वास ही गलत हो, तो इसका मतलब दूसरी सारी प्रयासों का कोई लाभ और लक्ष्य नहीं रहता है।

नागीमोर अमुनी

गाना का धार्मिक प्राचारक



सदा रहनेवाला संदेश सारे नबी और रसूलों का धर्म है ।

इस्लाम वह धर्म है जिसको ईश्वर ने सारी मानवता के लिए अवतरित किया है। ईश्वर ने कहा।

अतः तुम्हारा पूज्य-प्रभु अकेला पूज्य-प्रभु है। तो उसी के आज्ञाकारी बनकर रहो और विनम्रता अपनाते-वालों को शुभ-सूचना दे दो। (अल हज, 34)

वह सारे नबी और रसूलों का धर्म है। ईश्वर ने कहा कहो, हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमारी ओर उतरी और जो इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक और याकूब और उनकी संतान की ओर उतरी, और जो मूसा और ईसा को मिली और जो सभी नबियों को उनके रब की ओर से प्रदान की गई। हम उनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और हम केवल उसी के आज्ञाकारी हैं। (अल-बकरा, 136)

निश्चित रूप से ईश्वर के रसूलों ने इसी धर्म पर विश्वास किया। ईश्वर के लिए अपने आत्मसमर्पण की घोषणा की और उसी का संदेश पहुँचाया। ईश्वर ने नूह (अलैहिसलाम) के बारे में कहा। उन्हें नूह का वृत्तान्त सुनाओ। जब उसने अपनी कौम से कहा, ऐ मेरी कौम के लोगों । यदि मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों के द्वारा नसीहत करना तुम्हें भारी हो गया है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है। तुम अपना मामला ठहरालो और अपने ठहराए हुए साझीदारों को भी साथ लेलो, फिर तुम्हारा मामला तुमपर कुछ संदिग्ध न रहे, फिर मेरे साथ जो कुछ करना है, करडालो और मुझे मुहलत न दो। फिर यदि तुम मुँह फेरोगे तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं माँगा। मेरा बदला (पारिश्रमिक) बस अल्लाह के ज़िम्मे है और आदेश मुझे मुस्लिम (आज्ञाकारी) होने का हुआ है। (यूनुस, 71, 72)

ईश्वर ने इब्राहीम (अलैहिसलाम) के बारे में कहा। क्योंकि जब उससे उसके रब ने कहा, मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जा। उसने कहा, मैं सारे संसार के रब का मुस्लिम हो गया। (अल-बकरा, 131)

बल्कि इब्राहीम ने बाद में आनेवाली अपनी संतान को भी इसी बात की वसीयत की। ईश्वर ने इस बारे में यह कहा। और इसी की वसीयत इब्राहीम ने अपने बेटों को की और याकूब ने भी (अपनी संतान को) की कि ऐ मेरे बेटों। अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन (धर्म) चुना है, तो इस्लाम (ईश-आज्ञापालन) के अतिरिक्त किसी और दशा में तुम्हारी मृत्यु न हो। (क्या तुम इब्राहीम के वसीयत करते समय मौजूद थे) या तुम मौजूद थे जब याकूब की मृत्यु का समय आया। जब उसने अपने बेटों से कहा, तुम मेरे पश्चात किसकी ईबादत करोगे, उन्होंने कहा, हम आपके इष्ट-पूज्य और आपके पूर्वज इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक के इष्ट-पूज्य की बन्दगी करेंगे - जो अकेला इष्ट-पूज्य है, और हम उसी के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। (अल-बकरा, 132, 133)

ईश्वर ने मूसा (अलैहिसलाम) के बारे में कहा। मूसा ने कहा, ऐ मेरी क्रौम के लोगों। यदि तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसपर भरोसा करो, यदि तुम आज्ञाकारी हो। (यूनुस, 84)

ईश्वर ने ईसा के बारे में कथा के रूप में यह कहा। और याद करो जब मैंने हवारियों (साथियों और शार्गिदों) के दिल में डाला कि (मुझपर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, तो उन्होंने कहा, हम ईमान लाए और तुम गवाह रहो कि हम मुस्लिम (फरमाँबरदार) हैं। (अल-माइदा, 111)

इस्लाम मानवता के लिए वह अंतिम देवत्व सन्देश है, जिसको ईश्वर ने मुहम्मद द्वारा सारी मानवता के लिए भेजा है। इसी को धर्म के रूप में ईश्वर ने संपूर्ण किया है, और अपने भक्तों के लिए पसंद किया है। ईश्वर ने कहा।



आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे धर्म को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द किया। (अल-माइदा, 3)

इस पवित्र आयत में ईश्वर ने यह सूचना दी है कि वह मानवता के लिए इस्लाम को धर्म के रूप में पसन्द किया है। जिससे कभी वह निराश नहीं होगा। ईश्वर ने यह घोषणा की कि इस्लाम सत्य धर्म है। इसके अतिरिक्त किसी से वह कोई धर्म स्वीकार नहीं करेगा। ईश्वर ने कहा। दीन (धर्म) तो अल्लाह की दृष्टि में इस्लाम ही है। (अल-इमरान, 19)

ईश्वर ने यह भी कहा। जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आखिरत में वह घाटा उठानेवालों में से होगा। (आल-इमरान, 85)

पहली आयत में ईश्वर ने इस बात की पुष्टि की है कि ईश्वर की दृष्टि में धर्म केवल इस्लाम ही है। दूसरी आयत में ईश्वर ने यह सूचना दी है कि वह किसी से इस्लाम के अतिरिक्त कोई और धर्म हरगिस स्वीकार नहीं करेगा। मृत्यु के बाद सफल और सुखी केवल मुसलमान ही हैं। इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म का अनुसरण करते हुए मर जाने वाले भविष्य जीवन में घाटे में हैं और उन्हें नरक में दण्ड दिया जायेगा। इसी कारण सारे रसूलों ने ईश्वर के नाम आत्मसमर्पण करने की घोषणा की। इस्लाम न लानेवालों से अपनी बेगुनाही की सूचना दी। यहूदी या ईसाइयों में से जो भी मुक्ति और प्रसन्नता प्राप्त करना चाहे, वह इस्लाम में प्रवेश करे। इस्लाम के रसूल मुहम्मद का पालन करे, ताकि वह वास्तव में मूसा और ईसा का पालन करनेवाला बने। इसलिए कि मूसा, ईसा, मुहम्मद और ईश्वर के सारे रसूल मुस्लिम थे। सब ने इस्लाम की ओर बुलाया इसलिए कि ईश्वर का यही वह धर्म है जिसको लेकर वे आये हैं। रसूलों के समापक मुहम्मद के आ जाने के बाद से खियामत तक इस धरती पर पाये जाने वाले हर व्यक्ति के लिए अपने आपको मुसलमान कहना, और मुसलमान होने का दावा करना, केवल उसी समय ईश्वर स्वीकार करता है जब कि वह मुहम्मद को ईश्वर द्वारा भेजा गया रसूल मानता है। उसका पालन करता है, और मुहम्मद पर अवतरित की हुई खुरआन के अनुसार चलता है। निश्चित रूप से ईश्वर के रसूल ने कहा: उस जात (ईश्वर) की कसम जिसके

हाथ में मुहम्मद की जान है, इस उम्मत (कौम) का कोई भी व्यक्ति, यहूदी हो या ईसाई, मुझसे कोई बात सुने, फिर उसकी मृत्यु हो जाये, और वह मेरे लाये हुए सन्देश पर विश्वास न रखे, तो वह नरक वालों में से होगा। (इस हदीस को ईमाम मुस्लिम ने वर्णन किया।)

इस्लाम सरल है

इस्लाम की महान सरलता एकीकरण के सिद्धांत से निकली हुई है। इस सरलता में इस्लाम की शक्ति का रहस्य है। इस्लाम धर्म को समझना आसान है। वह दूसरे धर्मों में उपलब्ध बुद्धी स्वीकार न करने वाली विरोधाभासी और रहस्य बातों से खाली है। एक ईश्वर के होने और ईश्वर की दृष्टि में सारी मानवता एक समान होने के इस्लामिक नियमों से अधिकतर खुली कोई और बात नहीं है।

गुस्ताव लोबुन

फ्रेंच इतिहासकार



सदा रहनेवाले सन्देश की पूर्णतः

इस्लाम धर्म जिसको लेकर ईश्वर ने अपने रसूल मुहम्मद को सारी मानवता के लिए भेजा है, वह ईश्वर पर विश्वास और उसे एकीकरण का सिद्धांत वाला धर्म है। ईश्वर ने कहा। वह जीवन्त है। उसके सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः उसी को पुकारो धर्म को उसी के लिए विरुद्ध करके। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है। कह दो, मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी बन्दगी करूँ जिन्हें तुम अल्लाह से हटकर पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे रब की ओर से खुले प्रमाण आचुके हैं। मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं सारे संसार के रब के आगे नत मस्तक हो जाऊँ। (अल-ग़ाफिर 65,66)

वह एक ईश्वर के लिए प्रार्थना को शुद्ध बनाने का धर्म है। ईश्वर ने कहा। क्या अलग-अलग बहुत-से रब अच्छे हैं या अकेला अल्लाह, जिसका प्रभुत्व सब पर है। तुम उसके सिवा जिनकी भी बन्दगी करते हो वे तो बस निरे नाम हैं जो तुमने रख छोड़े हैं, और तुम्हारे बाप-दादा ने। उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। सत्ता और अधिकार तो बस अल्लाह का है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो। (यूसुफ, 39, 40)

वह श्रेष्ठ बुद्धियों का धर्म है, जो अपनी सत्यता और पवित्रता के साथ प्रस्तुत किया जाये, तो सारे लोग अनुयायी और आत्मसमर्पण करते हुए ज़रूर इसका पालन करेंगे। ईश्वर ने कहा। यही सीधा, सच्चा दीन (धर्म) है, किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (यूसुफ, 40)

सबूत, प्रमाण और तर्क का धर्म है। कहो, लाओ अपना प्रमाण यदि तुम सच्चे हो। (अल-नम्ल, 64)

सुख, प्रसन्नता और शांति का धर्म है। जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन कराएंगे। (अल-नहल, 97)

वह इस्लाम धर्म जिसको देकर ईश्वर ने अपने रसूल मुहम्मद को भेजा है, उसमें ईश्वर ने लाभदायक चीजों को हलाल और नष्टदायक अस्वच्छ चीजों को हARAM किया है। हर भलाई का आदेश दिया है। हर बुराई से रोका है। वह आसान और सरल धर्म है। इसमें कोई कष्ट नहीं है। मानव की क्षमता से अधिक कोई बोझ नहीं है। ईश्वर ने कहा। (तो आज इस दयालुता के अधिकारी वे लोग हैं) जो उस रसूल, उम्मी नबी, का अनुसरण करते हैं जिसे वे अपने यहाँ तौरात और इन्जील में लिखा पाते हैं। और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता और बुराई से

उन्हें रोकता है, उनके लिए अच्छी-स्वच्छ चीजों को हलाल और बुरी-अस्वच्छ चीजों को उनके लिए हARAM ठहराता है और उनपर से उनके वे बोझ उतारता है जो अब तक उनपर लदे हुए थे और उन बन्धनों को खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अतः जो लोग उसपर ईमान लाये, उसका सम्मान किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं। (अल-आराफ, 157)

वह पूर्ण शुद्ध धर्म है जो हर समय और स्थान के लिये धरती और उस पर रहनेवालों के ईश्वर की ओर से समाप्त किये जाते तक संतुलित है। निश्चित रूप से यह धर्म मानव के

ईश्वर के अतिरिक्त किसी और की प्रार्थना नहीं।

इस्लाम के एकीकरण के नियम ने मुझे सौचने पर मजबूर किया। इस्लाम का यही सबसे प्रमुख संदेश है। एकीकरण के सिद्धांत ने मुझे एक ईश्वर का भक्त बना दिया। मैं किसी मानव का भक्त नहीं हूँ। इस्लामिक एकीकरण का सिद्धांत मानव को पवित्र बनाता है। किसी मानव के सामने झुकने से दूर रखता है। वास्तव में यही स्वतंत्रता है। क्योंकि एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के लिए प्रार्थना नहीं।

इब्राहीम खलील

इजिप्शियन धार्मिक प्रचारक



धर्म और संसार का मिलाप

धार्मिक और संसारिक प्रभाव का यह अनोखा संगम, जिसका इतिहास में उदाहरण नहीं मिलता है, यह संगम मुहम्मद को मानवीय इतिहास में अधिकतर प्रभावित व्यक्तित्व स्वीकार करने पर मजबूर करता है।

मैकल हार्ट

अमेरिकन लेखक



क्यों नहीं

जब इस्लाम यही है, तो क्यों नहीं हम सब मुस्लिम बन जाते।

गुतः

जर्मनी लेखक

धार्मिक और संसारिक आवश्यकताओं को लेकर आया है।

वह प्रसन्नता और शांति का मार्ग है। ज्ञान और सभ्यता का मार्ग है। न्याय और कृपा का मार्ग है। सम्मान और स्वतंत्रता का मार्ग है। हर भलाई और अच्छाई का मार्ग है। यह धर्म कितना ही महान और पूर्ण है। और धर्म की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है जिसने अपने आप को ईश्वर के आगे झुका दिया। ईश्वर ने कहा और दीन (धर्म) की दृष्टि से उस व्यक्ति से अच्छा कौन हो सकता है जिसने अपने आपको अल्लाह के आगे झुका दिया और वह अत्यन्त सत्कर्मी भी हो और इब्राहीम के तरीके का अनुसरण करे, जो सबसे कटकर एक का हो गया था। अल्लाह ने इब्राहीम को अपना घनिष्ठ मित्र बनाया था। (अल-निसा, 125)

प्रजापति (जो तुम पर तुम्हारी अपनी जान से भी ज्यादा दयालुता है) प्रजापति की ओर से यह एक सदा है, जो तुम्हें अंधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर आने का संदेश देती है। ईश्वर ने कहा।

कहो, ऐ किताबवालों। आओ एक ऐसी बात की ओर जिसे हमारे और तुम्हारे बीच समान मान्यता प्राप्त है, यह कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की बन्दगी न करें और न उसके साथ किसी चीज़ को साझी ठहराएँ और न परस्पर हममें से कोई एक-दूसरे को अल्लाह से हटकर रब बनाए। फिर यदि वे मुँह मोड़ें तो कह दो, गवाह रहो, हम तो मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं। (आले-इमरान, 64)

ईश्वर के सामने अपने आप को झुकानेवाले इस मानव के मुकाबले में एक दूसरा मानव ऐसा है जो ईश्वर द्वारा बनायी गयी अपनी इस्लामिक वृत्ति (फितरत) को, इस धर्म के सत्य होने का प्रमाण देने वाली निशानियों और चमत्कारों के बावजूद, इन्कार

के पर्दे से छुपाना चाहता है। ईश्वर के एकीकरण के सिद्धांत के विरोध में वह अपने लिए बहु आराधिकता का चयन करता है। सत्य, विश्वास, मार्गदर्शन के प्रकाश के बदले मिथक, किवंदती और भ्रम के अंधेरे में घूमने लगा।

वह अपने लिए स्वयं साधुओं और पुजारियों का भक्त बनना पसंद किया, बल्कि एक ईश्वर का भक्त होने के बदले रसूलों का भक्त होने को पसन्द किया। उसने अपने वृत्ति (फितरत) को मिटा दिया। अपनी बुद्धि को व्यर्थ बना दिया। ईश्वर की ओर से बनायी गयी वृत्ति को छोड़कर हवस और इच्छाओं का पालन किया। जबकि प्रत्येक शिशु इस्लाम की वृत्ति ही (प्रकृति) पर जन्म लेता है।

अल्लाह की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिस पर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनायी हुई संरचना बदली नहीं जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-रूम, 30)

अब आप स्वयं यह अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि काफिर कितना ज़्यादा गुमराही और अंधेरे में पड़ा हुआ है। ईश्वर ने कहा।

वही तो है जिसने तुम्हें धरती में खलीफ़ा बनाया। अब जो कोई इन्कार करेगा, उसके इन्कार का वबाल उसी पर है। इनकार करनेवालों का इन्कार उनके रब के यहाँ केवल प्रकोप ही को बढ़ाता है, और इन्कार करनेवालों का इन्कार केवल घाटे में ही अभिवृद्धि करता है। (फ़ातिर, 39)



मुहम्मद का अपने संदेश पर विश्वास

वह राजा और शासक जिनके पास रसूल कि ओर से पत्र पहुँचे, शायद वे सब इस साधारण व्यक्ति से आश्चर्य हो गये, जो उन्हें आत्मसमर्पण का संदेश देता है। लेकिन पत्रों को भेजने का यह सिलसिला हमें मुहम्मद का अपने आप पर और अपने संदेश पर विश्वास की सूचना देता है। इसी विश्वास और यकीन के कारण मुहम्मद ने अपने समुदाय के लिए शक्ति, सम्मानता और प्रभाव का मार्ग खोल दिया है। वे जो जंगलों के वासी थे, उन्हें अपने काल कि मशहूर आधे संसार का विजेता बना दिया। मुहम्मद ने आपसी नफरत रखने वाले अरब समुदायों को एक ऐसा समुदाय बनाने के बाद इस संसार को छोड़ा, जो उत्साह और प्रेर्णा से भरा हुआ था।

जवहर लाल नेहरू
भारत के प्रथम प्रधानमंत्री

इस सन्देश के मूल नियम और विशेषताएँ क्या-क्या हैं।

(इस्लाम के) क़ानून बनाने के विधान

इस्लामी क़ानून अमूल्य नियम और विधान पर आधारित है, जिनसे इस क़ानून के अन्दर हर मानव, समय और स्थान के लिए आवश्यक है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण नियम निम्न लिखे जा रहे हैं।

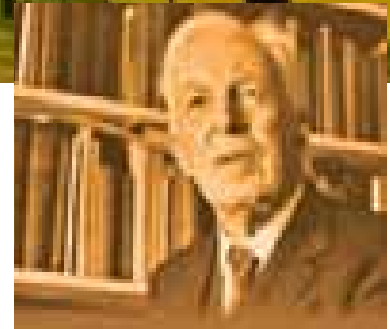
प्रथम: सरलता पैदा करना, कष्ट दूर करना।

इस्लाम के सारे आदेश उसके माननेवालों की क्षमता और शक्ति से बाहर नहीं है। न उसमें कोई परेशानी है, जो उचित सरल व्यवहार से बाहर हो। इसलिए कि धर्म बिल्कुल आसान है। ईश्वर ने कहा। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख्ती और कठिनाई नहीं चाहता। (अल-बक्रा, 185)

ईश्वर ने कहा अल्लाह चाहता है कि तुम पर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इन्सान निर्बल पैदा किया गया है। (अल-निसा, 28)

ईश्वर ने कहा अल्लाह किसी जीव पर बस उसकी सामर्थ्य और समाई के अनुसार ही दायित्व का भार डालता है। (अल-बक्रा, 286)

आइषा (रज़ियल्लाह अन्हा) ने कहा: ईश्वर के रसूल (मुहम्मद) को जब भी दो बातों में से किसी एक के चयन करने का विकल्प दिया गया, तो आपने इनमें से अधिकतर सरल बात ही का चयन किया, जब कि वह न हो। अगर



मुहम्मद के ईश देवत्व का संदेश

मुहम्मद ने अपने सारे जीवन को अरब समाज में अपने संदेश के दो पक्षों को उपयुक्त बनाने में लगा दिया। वह दो पक्ष यह है: धार्मिक विचारों में समानता और शासन के नियम और विधि में समानता। निश्चय इस्लाम धर्म के संपूर्ण नियमों के कारण यह दो चिज़ें उपयुक्त हो गई, क्योंकि इस्लाम अपने अंदर एक ही समय में एकता और प्राधिकरण का अधिकार रखता है। इसी कारण इस्लाम के भीतर ऐसी शक्तिशाली प्रेरणा पैदा हो गई, जिसने एक अज्ञानी समुदाय को सभ्य समुदाय बना दिया।

अर्नाल्ड टोयेम्बी
ब्रिटीष इतिहासकार

वह पाप की बात हो तो आप ही सब से ज्यादा उससे दूर रहते थे। ईश्वर की कसम: आपके साथ होनेवाले किसी भी व्यवहार का आपने अपने लिए कभी प्रतिकार (बदला) नहीं किया। जब ईश्वर के आदेशों का उल्लंघन किया जाए, तो फिर आपने ईश्वर के लिए प्रतिकार किया। (इस हदीस को इमाम बुखारी ने वर्णन किया)

इस्लामी क़ानून में दायित्व का कम होना भी कष्ट को दूर करने का एक उदाहरण है। इस प्रकार से कि बिना कष्ट और मज़बूरी के मानव के लिए इस दायित्व का उठाना आसान होता है। इसलिए कि जबरदस्ती से मजबूर करने में कष्ट और परेशानी है, जब कि (इस्लाम में) कष्ट बिल्कुल नहीं है। ईश्वर ने कहा ।

और धर्म के मामले में तुमपर कोई तंगी और कठिनाई नहीं रखी। (अल-हज, 78)

इसी प्रकार दायित्व को लागू करने का लक्ष्य मानव को इस संसार और भविष्य संसार में सुखी जीवन तक पहुँचाना है। परन्तु इस्लामिक नियम मानवीय व्यक्तित्व की क्षमता के अनुसार ही लागू किये जाते हैं। ईश्वर ने कहा । ऐ ईमान लानेवालों । ऐसी चीज़ों के विषय

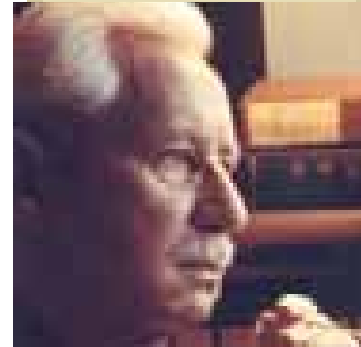


गहरा सिद्धांत

इस्लाम के पाँच सतूनों में एसी कोई बात नहीं है जिसे मुस्लिम के अतिरिक्त कोई व्यक्ति नफरत करे। हालांकि इस्लाम के नियम साधारण और बहुत कम हैं, फिर भी इन में किसी बदलाव की आवश्यकता नहीं है। यही वह कारण है कि इस्लामिक सिद्धांत हर मुस्लिम के मन में बैठ जाता है। निस्संदेह इस्लामिक सिद्धांत के वास्तविक महत्व को स्वयं शक्ति व प्रभाव प्राप्त है।

जॉर्ज सार्थोन

हार्वर्ड और वाशिंगटन के विश्वविद्यालय का लेक्चरर



अधिक धर्म महत्वपूर्ण विषय है

मुसलमानों कि नैतिकता, धार्मिक और शासन के नियम सारे धर्म पर आधारित हैं। इस्लाम सारे धर्मों में अधिकतर साधारण और साफ है। इस्लाम कि जड़ ईश्वर (अल्लाह) के अतिरिक्त किसी और को पूज्य प्रभु न मानने और मुहम्मद को ईश्वर का रसूल मानने की गवही देना है।

वैडोरान्ट

अमेरिकन लेखक

में न पूछो कि वे यदि तुमपर स्पष्ट कर दी जाएँ तो तुम्हें बुरी लगें। यदि तुम उन्हें ऐसे समय में पूछोगे, जबकि ख़ुरआन अवतरित हो रहा है, तो वे तुमपर स्पष्ट कर दी जाएँगी। अल्लाह ने उसे क्षमा करदिया । अल्लाह बहुत क्षमा करनेवाला, सहनशील है। तुमसे पहले कुछ लोग इस तरह के प्रश्न कर चुके हैं, फिर वे उसके कारण इन्कार करनेवाले हो गए। (अल-माइदा, 101, 102)

द्वितीय: लोगों की आवश्यकताओं का खयाल रखना

इस्लाम धर्म के आदेशों का विचार करने वाले के लिए यह बात खुलकर सामने आती है कि इन आदेशों का लक्ष्य लोगों कि आवश्यकताओं को उपलब्ध कराना है। इस प्रकार कि लोगों के लिए भलाई और अच्छाई उपयुक्त हो। उनसे इस संसार और भविष्य संसार में बुराई और बिगाड दूर हो, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में। हर स्थान और हर समय। ईश्वर ने कहा । हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता बनाकर भेजा है। (अल-अंबिया, 107)



दयालुता लोगों की आवश्यकताएँ उपयुक्त कराने के लिए है। वरना अगर दया लक्ष्य न हो, तो रसूल को दयालुता के गुण से विवरण न किया जाता। सारे दायित्व का मूल इस संसार और भविष्य संसार में मानव की आवश्यकताएँ हैं। इसलिए कि ईश्वर को अपने किसी भक्त की आवश्यकता नहीं है। न उसको किसी की आज्ञाकारी से लाभ है, और न किसी की अवज्ञाकारी से नष्ट। सारे नियम न्याय, दयालुता, आवश्यकताएँ और तत्त्वदर्शिता पर आधारित हैं। हर वह बात जो न्याय से अन्याय की ओर, दया से निर्दया की ओर सुधार से बिगाड़ की ओर, और तत्त्वदर्शिता से अतत्त्वदर्शिता की ओर जाती हो, वह इस्लामी नियम में से नहीं है।

तृतीयः न्याय की हर कड़ी को उपयुक्त बनाना।

न्याय को सामान्य विधि के रूप में स्थापना करने पर कई इस्लामी प्रमाण उपलब्ध हैं। हमें कई ऐसी बातें मिलती हैं जो न्याय को स्थापना करने और अन्याय से (चाहे विरोधी के साथ क्यों न हो) दवेष करने का आदेश दिया है। ईश्वर ने कहा। ऐ ईमान लानेवालों। अल्लाह के लिए गवाह होकर दृढ़तापूर्वक, इन्साफ की रक्षा करनेवाले बनो और ऐसा न हो कि किसी गिरोह की शत्रुता तुम्हें इस बात पर उभार दे कि तुम इन्साफ करना छोड़ दो। इन्साफ करो, यही धर्मपरायणता से अधिक निकट है। अल्लाह का डर रखो, निश्चय ही जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह को उसकी खबर है। (अल-माइदा, 8)

चतुर्थः पूर्णतः और समावेश

निस्संदेह किसी भी धर्म और सन्देश के सत्य होने का प्रमाण उसकी पूर्णतः और समावेश की विशेषता से पूर्ति होना है। ईश्वर ने कहा। हमने किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है। (अल-अनआम, 38)

ईश्वर ने यह भी कहा हमने तुमपर किताब अवतरित की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना के रूप में। (अल-नहल, 89)

इस्लाम धर्म का समावेश सिद्धांत और विचार में, प्रार्थना और पूजा में, चरित्र और आचार में, नियम, आदेश, और पद्धतियों में, बल्कि जीवन के हर भाग में खुलकर सामने आता है।



इस्लाम आनंद और शान्ति

यहुद को इस्लाम के सायेतले शांती और न्याय मिला। जिसके द्वारा वे अन्याय और जुल्म से सुरक्षित रहे। वे कई सदियों से सुख और शांती में जीवन बिता रहे हैं।

नसीम सोस्त

नसीम सूसह इराख का यहुदी लेक्चरर

पाँचवाः सन्तुलन, मध्यस्थ और न्यायिक।

इस्लाम धर्म सन्तुलन, मध्यस्थ और न्यायिकता का धर्म है। और इसी प्रकार हमने तुम्हें बीच का एक उत्तम समुदाय बनाया है। (अल-बकरा, 143)

इस्लाम के आदेश और नियम में हर विषय अधिकतर गहराई के साथ तैयार बनाया गया है। उसने आकाश को ऊँचा किया और संतुलन स्थापित किया (अर-रहमान, 7)

ईश्वर ने मुस्लिमों को भी हर विषय में संतुलन रखने का आदेश दिया। जो खर्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और ना ही तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्य-मार्ग पर रहते हैं। (अल-फुरकान, 67)

नबी (मुहम्मद) ने अतिशयोक्ति से रोका। आप ने कहा धर्म में अतिशयोक्ति से बचो। क्योंकि तुम से पूर्व काल के लोगों को अतिशयोक्ति ने नाश किया। आप ने संतुलन रखने और हर अधिकारी को उसका अधिकार देने का आदेश दिया। आप ने कहा: तुम्हारे ईश्वर का तुमपर अधिकार है। तुम्हारे अपने शरीर का तुमपर अधिकार है। तुम्हारे परिवार वालों का तुमपर अधिकार है। हर अधिकारी को उसका अधिकार दो।

इस्लामिक नियम की विशेषताएँ ।

प्रथम: देवत्व स्रोत

इस्लाम धर्म का स्रोत वह महान प्रजापति है, जिसने मानव और ब्रह्माण्ड की हर चीज़ की सृष्टि की है। इस धर्म का देवत्व स्रोत होना इसके लिए कई विशेषताएँ उपलब्ध कराता है। इनमें से एक यह कि ईश्वर ही प्रजापति और दानी है। उसी को नियम बनाने का अधिकार है। सारे नबी और उनके अनुयायी एक ईश्वर की ओर ही नियमों को सौंपते थे। उसके अतिरिक्त हर नियम को ग़लत समझते थे। नबी और रसूलों के समापक ने अपने नियमों के बारे में जो कहा है, उसका विवरण करते हुए ईश्वर ने यह कहा। कह दो, मैं कोई पहला रसूल तो नहीं हूँ। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और न

यह कि तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा मैं तो बस उसी के अनुगामी हूँ जिसकी प्रकाशना मेरी ओर की जाती है और मैं तो केवल एक स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ। (अल-अहक़ाफ़, 9)

ईश्वर ने रसूल (ईश्वर के पास अपने ऊँचे दर्जे और बुलन्द शान के बावजूद) ईश्वर द्वारा अपनी ओर अवतरित किये हुए नियमों का पालन करते हैं। आप स्वयं कुछ घटनेवाले और विधि बनाने वाले नहीं हैं। ना आप ईश्वर की विधि का उल्लंघन करने वाले हैं। ईश्वर प्रजापति है। इसी कारण वही अपनी प्रजा का अधिकतर ज्ञान रखता है। ईश्वर ने कहा । क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया। वह सूक्ष्मदर्शी, खबर रखनेवाला है। (अल-मुल्क, 14)

ईश्वर अपने भक्तों की वृत्ति (प्रकृति), उनकी सुधार ने और बिगाड़ने वाली चीज़ें, उनके लाभ और नष्ट का अधिकतर ज्ञान रखता है। कारीगर के अतिरिक्त कोई और उसकी कारीगरी का ज्यादा ज्ञान नहीं रखता है।

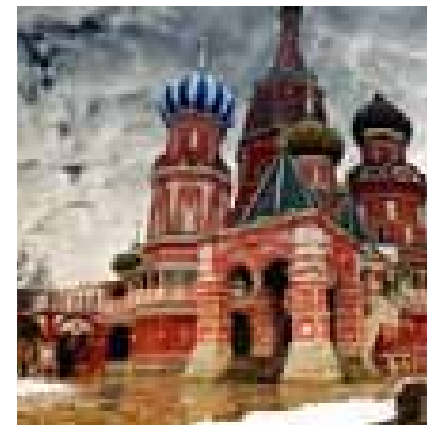
ईश्वर ने कहा । कहो, तुम अधिक जानते हो या अल्लाह । (अल-बक्रा, 140)

ईश्वर का ही विधिकार (कानून बनाने वाला) होना इस विधि को पूर्ण न्यायिक और सत्य बनाता है। ईश्वर की पवित्रता की दृष्टि से यह बात असंभव है कि वह जीव में से किसी एक भक्त के पक्ष में बात करे। इसी प्रकार इस्लामिक दण्ड संसारिक जीवन और परलोक में मिलने वाला है। जो व्यक्ति किसी भी कारण से संसारिक जीवन में अपना अधिकार प्राप्त न किया हो, या अपने दुर्यवहार के कारण उसको दण्ड न दिया गया हो, तो वह परलोक में इस का बदला ज़रूर पायेगा ।

द्वितीय: शरियत का नैतिकता से संबंध

सब इस बात को स्वीकार करते हैं कि नियमों का लक्ष्य केवल उसकी स्थापना से प्राप्त नहीं होता है। बल्कि आनंद और विश्वास के साथ लोगों के स्वीकार करने पर आधारित होता है। इसी प्रकार नियमों का वांछित लक्ष्य केवल उसकी अच्छी स्थापना और अच्छे आदेशों से पूरा नहीं होता है। बल्कि इसके साथ-साथ इस नियमों का उन लोगों के द्वारा पालन करना ज़रूरी है, जिनके लिए यह नियम बनाये गये। शर्त यह होगी कि लोग स्वयं प्रेरित होकर इन नियमों का पालन करें। यह प्रेरिता लोगों के अन्दर नियमों के न्यायिक होने का विश्वास रखने, उनको पसन्द करने और विधिकार (अल्लाह) के आदेशों से प्रसन्न होते हुए इन नियमों का पालन करने पर विधिकार की ओर से बदली मिलने का यकीन रखने पर पैदा होती है। क्योंकि इस्लामिक नियम विश्वास और पसन्द पर आधारित है। ईश्वर ने इस्लाम की शिक्षा देने में इसी का आदेश दिया है।

उनके विषय में वह बात कहो जो प्रभावकारी हो। (अल-निसा, 63) अच्छा तो नसीहत करो। तुम तो बस एक नसीहत करनेवाले हो। तुम उनपर कोई दारोगा नहीं हो। (अल-गाशियह, 21, 22)



सुखी धर्म

मेरे पहली बार अपने जीवन में शांति और सुख से प्रभावित हूँ। मेरे अंदर यह भावना पैदा हो गई कि मेरे जीवन का भी कुछ महत्व है। निश्चय मुझे इस सत्य का ज्ञान प्राप्त हो गया कि जिस ईश्वर को तुम नहीं देख पाते। वह तुम्हें हर स्थान में देखता है। तुम्हारे कर्मों की निगरानी करता है, और इन कर्मों को न्याय के तराजू में तोलता है। ताकि तुम्हें ख्यामत के दिन पूरा पूरा बदला दे।

अनटोली अन्डूबोष
रशियन कर्नल



इसी कारण ईश्वर ने अपने नबी (मुहम्मद) के प्रवेश होने को सीमित कर दिया। नबी ने कहा: मुझे तो केवल उच्च नैतिकता को पूर्ण करने के लिए भेजा गया है।

तृतीय: संसार और परलोक का आपसी संबंध ।

सारे मानवीय नियम और संसारिक कानून से इस्लामिक नियम को यह विशेषता प्राप्त है कि वह संसारिक जीवन में और परलोक में भी दण्ड और पुरस्कार देता है। परलोक का बदला सदा संसारिक बदले से अधिकतर महान होता है। इसी कारण मुस्लिम के मन में स्वयं प्रेरणा पैदा होती है, जो उसको आदेशों का पालन करने और ईश्वर का अनुयायी बनने की ओर ले जाती है। (हालांकि संसारिक जीवन में उसके लिए दण्ड से मुक्ति पाना संभव है) क्योंकि उसका यह विश्वास होता है कि ईश्वर की आँख कभी सोती नहीं। लोग संसारिक जीवन में अपने कार्य के अनुसार ईश्वर के सामने पकड़े जायेंगे। ईश्वर ने कहा। क्या वह समझता है कि उसपर किसी का बस न चलेगा। (अल-बलद, 5)

ईश्वर ने यह भी कहा क्या वह समझता है कि किसी ने उसे देखा नहीं । (अल-बलद, 7)

चतुर्थ: इस्लामी आदेशों की सामाजिक छवि (शैली)

इस्लामिक नियम एक समूह के फायदों को दूसरे समूह पर प्रधानता नहीं देता है, और न किसी व्यक्ति के विरोध में दूसरे व्यक्ति के पक्ष बात करता

है। लेकिन इस्लामिक नियम ने इस्लाम को अपने जीवन की विधि न माननेवाले अधिकतर मानवीय समुदाय जिस कठिन समस्या से पीड़ित है, उस समस्या का समाधान किया है। वह समस्या समुदाय में व्यक्तिगत लाभ और सामुदायिक लाभ के बीच का तनाव है। हम यह देखते हैं कि कुछ समुदाय बिल्कुल व्यक्तिगत लाभ को प्रधानता देती हैं। जैसा कि पूंजीवादी व्यवस्था का हाल है। जब कि कुछ समुदाय ने सामुदायिक लाभ को प्रधानता दी और व्यक्तिगत लाभ का नाश किया। उसकी विशेषता, स्वतंत्रता और मालिक बनने के अधिकार की वृत्ति को ज़ब्त किया, जिससे उसका व्यक्तित्व निम्न हो जाता है, प्रतिभाएँ छुप जाती हैं और उसकी क्षमताएँ व्यर्थ हो जाती हैं। लेकिन इस्लाम ने अपने नियमों की व्यवस्था मानव के समुदाय में इन अधिकारों के

बीच संतुलन रखने पर आधारित किया। इस्लामिक समुदाय के लिए इस्लाम ने सामुदायिक लाभ का ख्याल रखा। लेकिन साथ-साथ इस्लाम मुस्लिम व्यक्ति के लाभ से असावधान नहीं। राजनीतिक विभाग में हम यह देखते हैं कि राजा के लिए यह अधिकार है कि प्रजा उसके आदेशों का पालन करे, लेकिन शर्त यह है कि राजा के आदेश इस्लामिक नियमों के अनुसार हो। जिसमें सामुदायिक लाभ का ख्याल रखा गया हो। वरना इस्लाम राजा से उसका यह अधिकार छीन लेता है। क्योंकि ईश्वर के आदेशों से हटकर दूसरे विषयों में राजा का आज्ञा पालन करना ज़रूरी नहीं है।

पाँचवा: नियमों की स्थिरता और उनके अनुसरण करने में सरलता

इस्लाम बुनियादी नियमों पर आधारित है, जिसमें कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है। वह अपने प्रथम स्रोतों से स्थापित है। वह स्रोत पवित्र सुरक्षित कुरआन है, जिसकी सुरक्षा ईश्वर करता है। यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं। (अल हिज़्र, 9)

असत्य उस तक ना आसकेगा। असत्य उस तक न उसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, अवतरण है उसकी ओर से जो अत्यन्त तत्त्वदर्शी, प्रशंसा के योग्य है। (हा-मीम अस-सजदा, 42)

ईश्वर के नबी की हदीस (पवित्र वाणी) सुरक्षित और बड़े ध्यानपूर्वक रूप में लिखी गयी है। कुरआन और हदीस के अधिकतर वाणी शरीयत के साधारण आदेशों का तो विवरण करते हैं, लेकिन इस आदेशों का पालन करने से संबंधित

बातों का विवरण नहीं करते। ताकि ज्ञानी (उलमा) लोगों के पास अंदाज़ा लगाने का अधिकार रहे, जिससे वे परिस्थितियों का समय के साथ बदलने का खयाल रखे। लेकिन पालन करने के इन बड़ी सीमाओं को ऐसी सत्यता से मिलाकर छोड़ा, जो सरलता और क्षमता से संबंधित हो। क्योंकि महत्व यह है कि लक्ष्य प्राप्त हो। चाहे इस लक्ष्य तक पहुँचने वाले साधन और उसके रूप जो भी हो। शर्त यह होगी कि वह (साधन) या रूप किसी पवित्र वाणी या इस्लामी शरीयत के किसी नियम से न टकराती हो। इसी कारण इस्लामिक शरिअत में समुदायिक लाभ के अनुसरण करने का नियम बड़ी हद तक सरलता और विकास की क्षमता पर आधारित है। इसी प्रकार पूर्व काल में न पाये जानेवाले नये आदेशों का प्रकट होना कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि इन आदेशों के संबंधित घटनाएँ प्रकट होती हैं।

सम्मानिक और प्रभाविक धर्म

इस्लाम शांति, स्वतंत्रता, भाईचारागी, सम्मानता और समानता का धर्म है। यह बात इस्लाम के आदेश, नियम और आकार से साफ़ मालूम होती है। (उपवास) इस्लाम धर्म में दूसरे धर्मों के प्रकार नहीं है। क्योंकि मानव कि दुविधा शारीरिक आवश्यकताओं को दबाये रखने में नहीं है, जैसा कि साधु करते हैं। इस प्रकार की मानव का शरीर चलते फिरते हड्डियों के ढाँचे के समान हो जाता है। इसी कारण इस्लाम धर्म ने शारीरिक आवश्यकताओं को सुधारा, न कि उनको दबाया। इस्लाम में उपवास का उदाहारण मन को हराम(मना) की हुई ग़लत हवस के विरुद्ध में धैर्य और कष्ट का औदी बनाना। बाहीय और अंतरीय जीवन में ईश्वर से डरना और भूक-प्यास का मज़ा चकना है। ताकि उपवासी अर्धनि लोगों पर दया करे। इसी प्रकार से उपवास शरीर को दैनिक खुराक से कुछ विश्राम का अवसर देना है। क्योंकि उपवास मानव की आत्मा, बुद्धि, स्वस्थता, और समुदाय के बीच आपसी मिलाप, संघटन और सहयोग के लिए उपयोगी है।

ब्रेषा बेंकामर्ट

थाईलैंड का शिक्षक (जिसने बुधमत छोड़ कर इस्लाम स्वीकार कर लिया)

इस्लामिक शरिअत और संसारिक क़ानून... अंतर और इख़िलाफ़ ।

इस्लामिक नियम और संसारिक क़ानून के बीच बड़ा अंतर है। इन निम्न लिखित कारणों के अनुसार:

सम्मानता, महानता और आध्यात्मिक प्रेम ।

इस्लामिक शरिअत महानता, सम्मानता और आध्यात्मिक प्रेम की विशेषता रखती है। क्यों कि इसके अन्दर धार्मिक गुण हैं। इसकी स्थापना करनेवाला ईश्वर है। वह ईश्वर जिसके लिए सारे दिलों में महान सम्मानता है और उसी के आगे सब झुकते हैं।

इस्लामिक शरिअत का प्रकृति (वृत्ति) के समान होना और हर समय, स्थान के लिए उपयुक्त होना ।

इस्लामिक शरिअत हर समुदाय, हर कौम से निकट है, हालांकि उनका व्यवहार, सभ्यता, जात और भाषाएँ विभिन्न होती है। इसलिए कि शरिअत का बनाने वाला पवित्र ईश्वर है, जो पूर्वकाल और भविष्य काल का ज्ञान रखता है। मानव, उनकी प्रकृति, व्यवहार, वृत्ति की खबर रखता है। जब कि ईश्वर हवस और इच्छाओं के पीछे चलने से बहुत दूर है। अतः एक ओर का होकर अपने रुख को दीन (धर्म) की ओर जमा दो, अल्लाह की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिस पर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (अल-रूम, 30)

जहाँ तक संसारिक क़ानून की बात है, तो इसकी स्थापना करनेवाले मानव है। वे ज्ञान के किसी भी दर्जे को पहुँच जाये फिर भी उनका ज्ञान संपूर्ण नहीं है। अगर वे कल (पूर्वकाल) और आज (वर्तमान काल) का ज्ञान पाले, लेकिन वे आनेवाले कल का ज्ञान कभी प्राप्त नहीं कर सकते। अगर वे कुछ मानवीय व्यवहार का

ज्ञान प्राप्त करले लेकिन वे हर एक मानव के व्यवहार का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। इसी कारण संसारिक कानून हर प्रकृति और हर सभ्यता से मेल नहीं खाता है। क्योंकि यह कानून किसी एक समूह के लिए उपयुक्त हो, तो दूसरों के लिए वह उपयुक्त नहीं होगा।

इस्लामिक शरिअत की सत्यता, न्याय और सच से अनुरूपता

इस्लामिक शरिअत सत्य और न्याय से अनुरूप है। क्योंकि इसमें अशुद्ध, गलत, जुल्म, अन्याय होने का या हवस और इच्छाओं के पीछे चलने की संभावना नहीं है। ईश्वर ने कहा। तुम्हारे रब की बात सच्चाई और इन्साफ़ के साथ पूरी हुई, कोई नहीं जो उसकी बातों को बदल सके, और वह सुनता, जानता है। (अल-अनआम, 115)

वही एक ईश्वर है जो इच्छाओं से पवित्र है। हर विषय के बाह्य और आंतरिक का ज्ञान रखता है। अपने भक्तों के समस्याओं का ज्ञानी है। वह उसी विषय का आदेश देता है, जिसमें भक्तों का लाभ हो, और उसी विषय के करने से रोकता है जिसमें उनका नष्ट हो। संसारिक कानून, अशुद्ध, गलती, भूल और हवस की मार से पीड़ित हो सकते हैं। इसी कारण वह गलती, परिवर्तन और भूल से सुरक्षित नहीं रह सकता। ईश्वर ने कहा। यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते। (अल-निसा, 82)

शरिअत की ओर से मानवीय जीवन का खयाल रखना।

इस्लामिक शरिअत स्वयं वह नियम नहीं है, जिसकी स्थापना लोगों के विचारों ने की हो। बल्कि इनको ईश्वर ने मानवीय प्रकृति और मनोदशा के अनुसार बनाया है। क्योंकि जिसने लोगों की सृष्टि की है वही उनकी उपयुक्तता का अधिकतर ज्ञान रखता है। क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया। वह सूक्ष्मदर्शी, खबर रखने वाला है। (अल मुल्क, 14)

और वही इस बात का ज्ञान रखता है कि मानव से बोझ को कैसे हल्का किया जाय। अल्लाह चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका कर दे, क्योंकि इन्सान निर्बल पैदा किया गया है। (अल-निसा, 28)

जब कि संसारिक कानून विधिकार की इच्छाओं, उसकी रुचियों और सभ्यता के अनुसार बनाये जाते हैं।

इस्लामिक शरिअत का आध्यात्मिकता के साथ संबंध।

इस्लामिक शरिअत बाह्य और अंतरिक कार्य से संबंध रखती है। ईश्वर ने कहा। जान रखो कि अल्लाह तुम्हारे मन की बात भी जानता है। अतः उससे सावधान रहो, और यह भी जानलो कि अल्लाह अत्यन्त क्षमा करनेवाला, सहनशील है। (अल-बकरा, 235)

मानव निर्मित उन कानूनों के विपरीत, जो केवल बाह्य कार्य ही को ध्यान रखते हैं। आध्यात्मिकता और भविष्य जीवन से कोई रुचि नहीं रखते। जहाँ तक दण्ड का प्रश्न है, तो मानवीय निर्मित कानून में यह केवल संसारिक है।

प्रसन्न और पवित्र समुदाय

मुस्लिम समुदाय जो इस्लामिक आदेश और विचार का पालन करता है। वह प्रसन्न और पवित्र समुदाय है। जिस में किसी प्रकार का अपराध पाया नहीं जाता है।

ब्रेषा बेनकामर्ट

थाईलैंड का शिक्षक (जिसने बुधमत छोड़ कर इस्लाम स्वीकार कर लिया)

इस्लाम धर्म के स्रोत

इस्लाम धर्म अपने आदेश, सिद्धांत और नियमों देवत्व रहस्योद्घाटन (खुरआन और हदीस) से निकला। यही इस्लाम के स्रोत हैं। इन्हीं से इस्लामिक नियम, सिद्धांत और आदेश निकलते हैं। हम आगे इन दोनों के बारे में छोटा सा प्रसंग लिखेंगे।

1- पवित्र कुरआन:

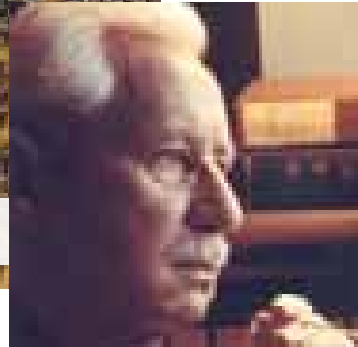
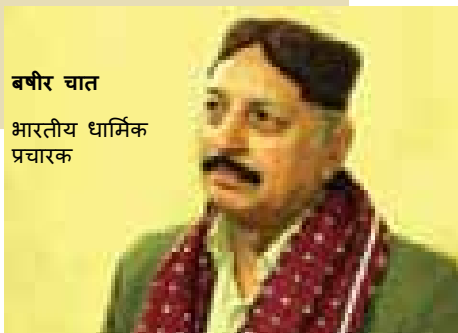
ईश्वर ने अपने रसूल मुहम्मद पर कुरआन अवतरित किया, जो डर रखनेवालों के लिए मार्गदर्शन, मुसलमानों के लिए संविधान, उन लोगों के लिए सुखी है जिनके प्रति ईश्वर ने मार्गदर्शन का निर्णय लिया है, और उन लोगों के लिए प्रकाशन है, जिनके प्रति ईश्वर ने सफलता लिख दी है। कुरआन उन नियमों पर आधारित है, जिनके लिए ईश्वर ने रसूलों को भेजा। कुरआन देवत्व पुस्तकों में कोई नई चीज़ नहीं है। इसी प्रकार मुहम्मद भी रसूलों में कोई नई बात नहीं है। निस्संदेह ईश्वर ने इब्राहीम पर कई पुस्तकें अवतरित किया। मूसा को तौरात से, दाऊद (डेविड) को ज़बूर से, और ईसा मसीह को बाइबल से सम्मान दिया। ये सारी पुस्तकें ईश्वर की ओर से अपने रसूलों पर वही (रहस्योद्घाटन) की गयी है। कुरआन के ईश्वर द्वारा वही होने, सारे रसूलों पर विश्वास रखने और इनमें से किसी के बीच अंतर न करने वाला होने का प्रमाण ईश्वर का यह उद्घाटन है।

खुरआन देवत्व पुस्तकों का समापक है

जिस समय मैंने एकीकरण के सिद्धांत पर विश्वास कर लिया। तो मैंने उन परिणाम की खोज करना प्रारंभ कर दिया। जिनसे यह परिणाम निकलता है कि खुरआन ईश्वर की पुस्तक और देवत्व पुस्तकों का समापक है। मैं ईश्वर का आभारी हूँ। उसने मुझे इस समस्या का साधन पाने की क्षमता दी। खुरआन वही अनोखी एक पुस्तक है जो दूसरी देवत्व पुस्तकों को मानती है। जबकि दूसरी सारी पुस्तकें एक दूसरे का तिरस्कार करती हैं। वास्तव में यही खुरआन की विशेषता में से एक विशेषता है।

बशीर चात

भारतीय धार्मिक प्रचारक



खुरआन कि छवी और उसकी महान्ता

14 सदियों तक खुरआन मुसलमानों के विचार, आचार और लाखों लोगों के प्रतिभा सुधारते रहा। खुरआन मन में अधिकतर सरल, अल्प अस्पष्टता, परंपरा और रिवाज का अनुसरण करने से बहुत दूर, मूर्ती पूजा और पुजारियों से मुक्ति पाने का सिद्धांत पैदा करता है। मुसलमानों के चारित्रिक और संस्कृतिक स्थल को ऊँचा करने में इस्लाम ही की बड़ी भूमिका है। इस्लाम ने ही मुसलमानों के बीच समाजिक विधी और समाजिक संघटन की स्थापना की है। उन्हें सही नियमों का पालन करने पर प्रोत्साहक बनाया। उनकी बुद्धि को मिथक, भ्रम, अन्याय और क्रूरता से आज़ाद किया। सेवकों कि स्थितियों को सुधारा और निम्न जाती लोगों के मन में सम्मान पैदा किया।

वेलडोरान्ट

अमेरिकन लेखक

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इन्कार करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच विच्छेद करें, और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते, और इस तरह वे चाहते हैं कि बीच की कोई राह अपनाएँ, वही लोग पक्के इन्कार करनेवाले हैं, और हमने इन्कार करनेवालों के लिये अपमान जनक यातना तैयार कर रखी है। रहे वे लोग जो अल्लाह और रसूलों पर ईमान रखते हैं और उनके (रसूलों के) बीच अन्तर नहीं करते। ऐसे लोगों को अल्लाह शीघ्र ही उनके प्रतिदान प्रदान करेगा। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है। (अल-निसा, 150, 152)

लेकिन इन पिछली पवित्र पुस्तकों में से अधिकतर पुस्तकें खो गयी हैं। इन में से बहुत सी किताबें मिट गयी हैं इन पुस्तकों में परिवर्तन और विरूपण भी हुआ है।

जहाँ तक पवित्र कुरआन की बात है, तो ईश्वर ने इसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली है। ईश्वर ने कहा। यह नसीहत निश्चय ही हमने अवतरित की है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं। (अल-हिज़, 9)

ईश्वर ने कुरआन को प्रमुख और पिछली पुस्तकों का समापक बनाया है। ईश्वर ने कहा। और हमने तुम्हारी ओर यह किताब हक के साथ उतारी है, जो उस किताब की पुष्टि करती है जो इसके पहले से मौजूद है और उसकी संरक्षक हैं। (अल-माइदा, 48)

कुरआन को अवतरित करनेवाले ईश्वर ने इसके बारे में विवरण करते हुए यह कहा कि कुरआन हर चीज़ को खोलकर बयान करता है। ईश्वर ने कहा। हमने तुमपर किताब अवतरित की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और मुस्लिमों (आज्ञाकारियों) के लिए मार्गदर्शन, दयालुता और शुभ-सूचना के रूप में। (अल-नहल, 89)

कुरआन मार्गदर्शन और दयालुता है। ईश्वर ने कहा । तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण, मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है। (अल-अनआम, 157)

कुरआन सब से सीधा मार्ग दिखाता है। ईश्वर ने कहा । वास्तव में यह कुरआन वह मार्ग दिखाता है जो सबसे सीधा है और उन मोमिनो को, जो अच्छे कर्म करते हैं, शुभ-सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा बदला है। (बनी इसराईल, 9)

कुरआन मानवता को उनके जीवन के हर भाग में सीधे रास्ते की ओर मार्ग दिखाता है।

पवित्र कुरआन मनुष्य की सारी आवश्यकताओं को पूरा करता है। कुरआन नियम, सिद्धांत, आदेश, व्यवहार, आचार और इसके अतिरिक्त बहुत सी बातें अपने अन्दर रखता है। ईश्वर ने कहा । हम ने किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है। (अल-अनआम, 38)



संपूर्ण पुस्तक

खुरआन शिक्षा देने और शिक्षित बनाने वाली पुस्तक है। खुरआन में केवल आदेश और धार्मिक संस्कार ही नहीं हैं। खुरआन जिन अच्छे कार्य की ओर मुस्लिम को बुलाता है, वह नैतिकता के भाग में सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक का मार्गदर्शन उसके आदेशों के प्रकार निशेदों में भी प्रकट है।

सिडनीवेषर

ओहायो(अमेरिका) विश्वविद्यालय का अध्यापक

2- नबी की हदीस (पवित्र वाणी)

ईश्वर ने अपने रसूल पर पवित्र कुरआन अवतरित किया, और वहयी (रहस्योद्घाटन) द्वारा हदीस उतारा। ईश्वर ने कहा वह तो बस एक प्रकाशन है जो की जा रही है। (अल-नज्म, 4)

हदीस तो कुरआन के समान है। रसूल ने कहा: ध्यान से सुनो, मुझे पुस्तक और इसके समान एक और चीज़ दी गयी है। ध्यान से सुनो, मुझे कुरआन और इसके समान एक और चीज़ दी गयी है। (इस हदीस को इमाम अहमद ने वर्णन किया है) हदीस ईश्वर द्वारा अपने रसूल मुहम्मद की ओर प्रकाशना है। क्योंकि मुहम्मद अपने इच्छाओं के अनुसार नहीं बोलते। बल्कि वह वही बात लोगों तक पहुँचाते हैं जिनका उन्हें आदेश मिलता है। ईश्वर ने कहा । मैं तो बस उसी का अनुगामी हूँ जिसकी प्रकाशना मेरी ओर की जाती है और मैं तो केवल एक स्पष्ट सावधान करनेवाला हूँ। (अल-अहकाफ़, 9)

हदीस इस्लाम का दूसरा स्रोत है । हदीस कहते हैं रसूल की हर बात या, कार्य को, या हर उस काम को जो रसूल के सामने किया गया हो, या वह बातें जिनमें रसूल के व्यक्तित्व के गुणों का विवरण किया गया हो, वह सही क्रमानुसार रूप से रसूल से जाकर मिलती हो। हदीस कुरआन का विवरण करनेवाली और उसको खोलकर बयान करनेवाली है। निश्चय ईश्वर ने अपने रसूल को यह आदेश दिया कि वह कुरआन में लिखी हुई साधारण, विशेष या अल्प प्रसंग का विवरण करें। ईश्वर ने कहा । और अब यह नसीहत तुम्हारी ओर हमने अवतरित की, ताकि तुम लोगों के समक्ष खोल-खोलकर बयान कर दो जो कुछ उनकी ओर

रौशन वाणी (हदीस)

मुहम्मद कि रौशन वाणी (हदीस) आज तक बाक़ी हैं। जो धर्ती पर मौजूद आपके लाखों अनुयायी के मन में स्थिर धार्मिक प्रेरणा का खुला परिमाण है।

इतेनडिन्हे

फ्रेंच आलोचक और चित्रकार



उतारा गया है, और ताकि वे सौच-विचार करें।
(अल-नहल, 44)

हदीस कुरआन का विवरण करती है। उसके वाक्य को खोल कर बयान करती है। कुरआन के अल्प प्रसंग के आदेशों का विस्तृतीकरण करती है। परन्तु रसूल अपनी ओर अपतर्कित किये हुए आदेशों का कभी उपन्यास से, कभी कर्म से और कभी इन दोनों से वर्णन करते थे। निस्संदेह कुछ आदेशों और नियमों का विवरण करने में हदीस स्वयं एक नियमवान ग्रंथ है।

हदीस इस्लाम के आदेश, सिद्धांत, प्रार्थना, व्यवहार और आचार का वास्तविक अनुरूप है। रसूल अपनी ओर अवतर्कित किये हुए आदेशों का पालन करते थे। लोगों के समक्ष उसका विवरण करते थे। अपने कर्मों के प्रकार लोगों को कार्य करने का आदेश देते थे। निस्संदेह ईश्वर ने रसूल की बातों और कार्य में ईमानवालों को उनका अनुसरण करने का आदेश दिया है, ताकि उनका ईमान संपूर्ण हो जाय। ईश्वर ने कहा। निस्संदेह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्शन है, अर्थात् उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे। (अल-अहज़ाब, 21)

मानवीय सहाबा ने रसूल से उपन्यास और कर्मों को भविष्य में आनेवालों तक पहुँचाया। फिर वे अपने बाद में आनेवालों तक पहुँचाये। इसके बाद हदीस की पुस्तकों में इसको लिखा गया। हदीस को पहुँचाने वाले लोग इस विषय में बड़ी गंभीरता से काम लेते थे कि किस व्यक्ति से वे हदीस ले रहे हैं। इसी प्रकार वे जिनसे हदीस लेते, उनसे वे यह आवेदन करते कि वे जिनसे हदीस लिये हैं वह उनके काल में जीवित हों। ताकि हदीस का काल चक्र इसका विवरण करनेवाले से लेकर अल्लाह के रसूल तक जा मिले और इस काल चक्र के सारे व्यक्ति न्यायिक, सत्य, विश्वासी और अमानतदार हों।



खुरआन और हदीस एक पल्ले में

खुरआन का पूर्ण रूप में प्रचार करने वाली वाणी हदीस कहलाती है। वह मुहम्मद के कार्य और सलाह से संबन्धित उपन्यास की एक कड़ी है। हदीस द्वारा मानव मुहम्मद के मन में पैदा होने वाली बातें जानता है। जो जीवन कि बदलते स्थितियों के सामने मुहम्मद के आचार का महत्वपूर्ण भाग है। हदीस खुरआन का विवरण करती है। हदीस के बिना कोई और चारा नहीं है।

जैक रेस्लर
प्रच्यविधी विचारक

कुरआन और हदीस को इस्लाम धर्म के दो महत्वपूर्ण स्रोत होने का विश्वास रखना ज़रूरी है। जिनका अनुसरण करना आदेशों का पालन करना, उनके निषेध से दूर रहना, उनकी सूचनाओं को सत्य मानना, उनमें विवरण किये

हुए ईश्वर के नाम, गुण और कर्मों पर विश्वास रखना, ईश्वर ने अपने ईमानवाले भक्तों के लिये जिन चीज़ों का वादा किया है और काफ़िरों को जिन चीज़ों से डराया है उन सब पर विश्वास रखना आवश्यक है। ईश्वर ने कहा। ये ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के झगड़ों में ये तुमसे फैसला न कराएँ। फिर जो फैसला तुम कर दो उसपर ये अपने दिल में कोई तंगी न पाएँ और पूरी तरह मान लें।
(अल-निसा, 65)

ईश्वर ने कहा रसूल जो कुछ तुम्हें दे उसे लेलो और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दें उससे रुक जाओ। (अल-हश्र, 7)

क्या ही प्रसन्न है वह व्यक्ति जो इस मार्ग का पथिक है। वह प्रसन्नता का मार्ग है।

नबी की हदीसों को एक जगह इकट्ठा करना

यह सारी वाणी कि बड़ी संख्या को हदीस कहते हैं। सहाबा से उसके चयन करने में बड़ी गंभीरता अपनाई गई। इसी प्रकार बहुत सी हदीसों एकट्ठा की गई।

जैक रेस्लर
फ्रेंच प्रच्यविधी विचारक



मार्ग दिखानी वाली हदीस

मुहम्मद की हदीस का अनुसरण करना वास्तव में इस्लाम धर्म के वजूद और उसकी प्रगती कि सुरक्षा है। हदीस का पालन न करना इस्लाम धर्म की प्रगती में कमी का कारण है। निश्चय हदीस फ़ौलादी स्थंभ है, जिस पर इस्लाम का महल बना है। जब आप किसी महल के स्थंभ ही को तोड़ दें, तो क्या आप पत्तों के घर के समान इस महल के टूट जाने से आश्चर्य होंगे।

ल्योबोल्ड फ़ायीस
ऑस्ट्रिया का आलोचक

